शिव आमंत्रण

RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष-10, अंक-08, हिन्दी (मासिक), अगस्त 2023, पृष्ठ 16, मूल्य- 12:50

बेटियों ने ईश्वरीय सेवा के लिए शिव को जीवन साथी के रूप में स्वीकारा

विश्व कल्याण में 450 बालब्रह्मचारिणी बेटियों का महासमर्पण

माता-पिता बोले- ऐसी साक्षात् दैवी स्वरूपा बेटियों को पाकर धन्य हो गया जीवन, खुशी में छलके आंसू

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

प्रभु से ऐसा प्रेम कि सीए,डॉक्टर, शिक्षिका, फैशन डिजाइनर, इंजीनियर बनने के बाद विश्व कल्याण और ईश्वरीय सेवा में खुद को अर्पण कर दिया। संयम के पथ पर चलते हुए साधना का यह दुर्गम मार्ग अपनाने वालीं एक दो नहीं बल्कि पूरी 450 बेटियां। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के इतिहास में पहली बार मुख्यालय शांतिवन में बालब्रह्मचारिणी बेटियों का विशाल महासमर्पण समारोह हुआ। इस दिव्य महोत्सव में देशभर से आए 15 हजार लोग साक्षी बने।

श्वेतवस्त्रों में सुनहरी चुनरी, गले में माला, बिंदी के साथ दुल्हन की तरह सजधजकर जब यह बेटियां डॉयमंड हाल पहुंचीं तो तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इन्हें खुशी में नाचते देख हर कोई भावुक हो उठा। इनके चेहरों पर कुछ पाने की खुशी को साफ देखा जा सकता था। अपनी बेटी को संयम के पथ पर चलने का संकल्प लेते देख माता-पिता की आंखों से खुशी में छलक आए। वह बोले- परमात्मा से यही कामना है कि हर जन्म में ऐसी कुल का उद्धार करने वाली, देवी स्वरूपा बेटी जन्मे। इस दौरान माता-पिता ने अपनी लाड़लियों का हाथ मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मुन्नी दीदी, राजयोगिनी संतोष दीदी के हाथों में सौंपा।

- ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय में ऐतिहासिक दिव्य अलौकिक समर्पण समारोह आयोजित

अलसुबह 3.30 बजे से शुरू हुई बहनों की दिनचर्या

परमात्मा पर अपना जीवन समर्पण करने वालीं सभी बहनों की दिनचर्या अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे से शुरु हुई। सबसे पहले सभी बहनों ने परमपिता शिव बाबा का एक घंटे ध्यान किया। इसके बाद सुबह 7 बजे से आठ बजे तक सत्संग (मुरली क्लास) में भाग लिया। दिन में एक-दूसरे को बधाइयों का दौर चलता रहा। शाम 4 बजे से दिव्य अलौकिक समर्पण समारोह का मुख्य कार्यक्रम आयोजित किया गया।

पांच साल सेवाकेंद्र पर रहने के बाद होता है चयन

राजयोग मेडिटेशन कोर्स के बाद छह माह तक नियमित सत्संग, राजयोग ध्यान के अभ्यास के बाद सेंटर इंचार्ज दीदी द्वारा रहने की अनुमति दी जाती है। तीन साल तक सेवाकेंद्र पर रहने के दौरान संस्थान की दिनचर्या और गाइडलाइन का पालन करना जरुरी होता है। बहनों का आचरण, चाल-चलन, स्वभाव, व्यवहार देखा-परखा जाता है। इसके बाद ट्रॉयल के लिए मुख्यालय शांतिवन माता-पिता का अनुमति पत्र भेजा जाता है। ट्रॉयल पीरियड के दो साल बाद फिर ब्रह्माकुमारी के रुप में समर्पण की प्रक्रिया पूरी की जाती है। समर्पण के बाद फिर बहनें पूर्ण रुप से सेवाकेंद्र के माध्यम से ब्रह्माकुमारी के रुप में अपनी सेवाएं देती हैं। संस्थान में 50 हजार से अधिक बहनें समर्पित हैं।

हे प्रभु! मोहे हर जनम बिटिया ही कीजो

बेटी को परमात्मा के कार्य में विश्व कल्याण के लिए दादी को सौंपा, बालिकाओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से बांधा समा

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर युवा बालब्रह्मचारिणी बेटियों ने जीवन में सत्कर्म और सत् धर्म की स्थापना का संकल्प लिया। अब इनके जीवन का एक ही उद्देश्य है जन-जन को अध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का संदेश देकर उन्हें जीवन जीने की कला सिखाना। अपने जीवन को प्रेरणामूर्त, उदाहरणमूर्त, तपस्वीमूर्त बनाकर समाज के सामने उदाहरण पेश करना। माता-पिता ने भी अपनी लाड़लियों को दादीजी के हाथों में सौंपते हुए कहा कि आज से मेरी बेटी आपकी अमानत है।

ब्रह्माकुमारी बनकर लिए सात संकल्प लिए-

- मैं दृढ़ संकल्प के साथ निश्चय पूर्वक यह कहती हूं कि सारे विश्व की आत्माओं के पिता कल्याणकारी परमात्मा शिव ज्योतिर्बिंदु स्वरूप हैं। वे वर्तमान समय हर कल्प के अनुसार इस धरा पर अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम द्वारा गीता ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा द्वारा आत्माओं को पावन बना रहे हैं।
- मैंने स्व विवेक, स्व इच्छा, अनुभव के आधार पर यह निर्णय लिया है कि अब मैं अपना सारा जीवन परमात्मा के इस पुनीत कार्य में समर्पित कर सफल करुं।
- आज 30 जून 2023 को मुख्य प्रशासिका आदरणीय दादी रतनमोहिनी जी के पावन सानिध्य में आयोजित समारोह में अव्यक्त बापदादा एवं सर्व ब्राह्मण परिवार के समक्ष यह प्रतिज्ञा करती हूं कि मैं अपने दिल में सदा एक दिलाराम शिव बाबा को ही दिल में बसाऊंगी। सदा श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ शिवबाबा की श्रीमत पर पूर्णतः चलूंगी।
- सदा शिवबाबा और उनके द्वारा रचित यज्ञ के प्रति आज्ञाकारी, ईमानदार और वफादार बनकर सच्चाई और दिल की सफाई के साथ चलूंगी। मन-वचन और कर्म से पवित्रता के व्रत का पालन करुंगी।
- शिव बाबा मुझे जहां बिठाएं, जो खिलाएं, जो पहनाएं इस कथन को अपने जीवन का आधार बनाकर चलूंगी। सादगी को अपने जीवन का शृंगार बनाऊंगी।

बेटियों के माता-पिता ने भी लिया संकल्प

- मैं अपनी लौकिक बच्ची को परमात्मा को समर्पित करती हूं।
- सर्व के सुखदाता, विश्व के कल्याणकारी, सर्व के आधारमूर्त, उद्धारमूर्त, प्यारे मात-पिता बापदादा तथा निमित्त बनी हुईं रतनमोहिनी दादीजी हम अपनी कुमारी के लौकिक मात-पिता अच्छी तरह से इस ईश्वरीय कार्य को जानते हैं।
- हमें बहुत खुशी है कि ऐसे विश्व परिवर्तन के श्रेष्ठ कार्य में हमारी पुत्री को सहयोगी बनने का सौभाग्य मिला।
- हमारी पुत्री सेवाकेंद्र में सेवारत है। उसका पवित्र, निर्मल, शांत और आनंदमय जीवन देखकर ईश्वरीय कार्य अर्थ समर्पित करने की शुभ इच्छा उत्पन्न हुई है।
- प्रेम तथा कायदे के संतुलन से स्वयं भगवान व विश्व के सर्व आत्माओं की दुआएं होती हैं। भाई-बहनों के पवित्र, त्यागमय, सेवामय जीवन की श्रेष्ठ धारणा, पवित्रता के नियम को भी हम जानते हैं।
- यदि इस नियम में पूर्ण रीति से मेरी बच्ची न चल सके व मर्यादाओं के विरुद्ध कोई कर्म करे तो इसके जीवन के प्रति हम संपूर्ण जिम्मेदार हैं। आप इसके जीवन के प्रति जो भी कदम उठाएंगी उसमें संपूर्ण सहमत रहेंगे।

परमात्मा कहते हैं नारी शक्ति ही विश्व का उद्धार करेगी। विश्व परिवर्तन के कार्य में नारी शक्ति की ही महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। छोटे से रुप में शुरु हुआ विश्व परिवर्तन का यह कारवां आज 46 हजार बहनों का विशाल संगठन बन गया है। ईश्वरीय सेवा में जीवन को अर्पण करना परम सौभाग्य की बात है।

- राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

आज एक साथ इतनी बहनों का समर्पण देखकर मन खुशी से झूम रहा है। ये बेटियां बहुत भाग्यशाली हैं। जिन्होंने युवावस्था में भौतिकता को छोड़कर तपस्या का मार्ग अपनाया है। आप सभी का जीवन सफल हो और समाज में उदाहरण पेश करें।

- राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

अपना जीवन परमात्मा पर अर्पण करने से बड़ा भाग्य कुछ नहीं हो सकता है। आपका एक-एक कर्म उदाहरणमूर्त हो। धरती से अंधकार मिटाने और ज्ञान प्रकाश फैलाने में शिव की शक्ति, भुजा बनकर, साथी बनकर सदा जीवन में आगे बढ़ते रहें। आपका जीवन तपस्यामूर्त, सादगीमूर्त हो।

- राजयोगी बीके निर्वैर भाई, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

युवावस्था में पवित्रता का संकल्प लेना अपनेआप में महान तप, साधना और संयम का मिसाल है। पवित्रता की शक्ति दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति है। पवित्रता से ही दुनिया में परिवर्तन होगा, जिसका आधार आप बहनें हो।

- राजयोगिनी बीके संतोष दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

वाह! मेरा भाग्य...भाग्यविधाता परमात्मा बने मेरे जीवनसाथी

युवावस्था जीवन का वह अमृत काल है जिसमें आप जो दिशा देना चाहें दे सकते हैं। युवाओं में अध्यात्म, मेडिटेशन के प्रति लगाव और विश्व कल्याण की भावना काबिलेतारीफ है। उनकी आंखों में दुनिया को बदलने, नई दुनिया लाने का महान लक्ष्य वाणी के साथ कर्मों में भी दिखता है। ऐसी उच्च शिक्षित बेटियों ने शिक्षा पूरी कर अध्यात्म का मार्ग चुना ताकि दुनिया को राह दिखा सकें, परमात्मा की मददगार बन सकें।

कॉलेज में लेक्चरर थी। सोशल सर्विस के लिए संस्थान से जुड़ी। बाद में मुझे पता चला कि यहां हम सोशल के साथ हम स्प्रीचुअल सर्विस कर सकते हैं। यहां का ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन बहुत अच्छा लगा। इसलिए ब्रह्माकुमारी बनकर समाज कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित करने का फैसला किया है।

- बीके डॉ. मनीषा, पीएचडी (फिजिक्स), रोहतक, हरियाणा

बचपन से ही अध्यात्म के प्रति विशेष लगाव रहा। सपना था कि समाज के लिए कुछ करना है। परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनना है। इसलिए राजयोगी जीवनशैली का मार्ग अपनाया। खुद को भाग्यशाली समझती हूं कि परमात्मा शिव को जीवनसाथी के रुप में चुना है। दुनिया के सारे रिश्तों में कहीं न कहीं दुख ही मिलता है। ईश्वर का प्रेम ही निस्वार्थ, सच्चा है।

- बीके पूजा, दिल्ली

बचपन से ही शांति और अध्यात्म की ओर झुकाव रहा। साथ ही मेडिटेशन करना दिनचर्या में शामिल रहा। दुनिया में शांति केवल आध्यात्मिक ज्ञान से ही संभव है। पढ़ाई से लेकर खेलकूद में हमेशा फर्स्ट रही। खुद को भाग्यशाली समझती हूं कि ऐसे परिवार में जन्म लिया। मेरी तीनों बहनें ब्रह्माकुमारी हैं। माता-पिता भी हमारे फैसले में खुश हैं।

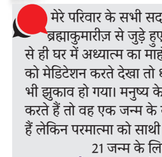

- बीके ज्योति, एमएससी, पटना, बिहार

कॉलेज में एक क्लासमेट ने सुसाइट कर लिया। इस घटना ने जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदल दिया। उसी पल संकल्प किया कि अब जीवन लोगों के कल्याण के लिए लगाऊंगी। यदि जीवन में दस लोगों को भी ऐसी घटनाओं से बचा लिया तो जीवन सफल मानूंगी। विश्व कल्याण, लोगों को सुखमय जीवन की राह दिखाना ही उद्देश्य है।

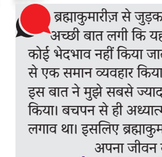

- बीके तुलसी, इंजीनियरिंग, महाराष्ट्र

ढाई लाख का पैकेज छोड़ आध्यात्मिक जीवन को चुना। बचपन से ही पवित्र जीवन अच्छा लगता था। जब भी ध्यान में बैठती तो दिव्य अनुभूति होती थी। धीरे-धीरे राजयोग में मन रमने लगा तो पूरी तरह से ब्रह्माकुमारी बनकर विश्व सेवा का मार्ग अपनाया। भाग्यशाली समझती हूं कि मैं परमात्मा शिव की सजनी बनी हूं।

- बीके हिना, फैशन डिजाइनिंग, म्यूजिक में डिग्री डिप्लोमा, बीकानेर, राज.

जब पांचवी क्लास में थी तभी से राजयोग ध्यान का अभ्यास कर रही हूं। धीरे-धीरे आध्यात्मिक जीवन को ही अपना लक्ष्य बना लिया। विश्व कल्याण के लिए मैंने परमपिता शिव परमात्मा को मन-बुद्धि से अपना जीवनसाथी अपनाया है। अब परमात्मा की सेवा और जन कल्याण ही जीवन का लक्ष्य है। मेरे माता-पिता सबसे ज्यादा खुश हैं। -

बीके निकिता, बीएससी, जलगांव, महाराष्ट्र

ब्रह्माकुमारीज़ के इस ज्ञान में सबसे अच्छी बात मुझे पवित्रता की लगी। क्योंकि पवित्रता की शक्ति से ही पवित्र दुनिया की स्थापना होगी। परमपिता परमात्मा इस धरा पर आकर ब्रह्मा बाबा के तन का आधार लेकर ज्ञान दे रहे हैं और सतयुगी दुनिया की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनने के लिए ब्रह्माकुमारी बनी।

- बीके गायत्री, बीफार्मा, बास्केट, उत्तराखंड

इस सृष्टि को परिवर्तन करने के लिए स्वयं परमात्मा आए हैं। वह हमें पवित्रता की धारणा की शिक्षा देते हैं। इस सृष्टि को पावन बनाना, नई दुनिया लाने के कार्य में हम पवित्रता को अपनाकर ही बन सकते हैं। इसलिए परमात्मा के कार्य में सहयोग देने के लिए ब्रह्माकुमारी बनकर पवित्र जीवन का रास्ता चुना है।

- बीके नेहा, अंबाला डिग्री कॉलेज, हरियाणा

जब मैंने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करना शुरु किया तो मन को असीम शांति की अनुभूति होने लगी। मन अध्यात्म में रमने लगा। अध्यात्म की गहराई में गई तो जाना की इस दुनिया का सत्य परमात्मा का ध्यान ही है। इसलिए ब्रह्माकुमारी बनकर मानव कल्याण की भावना को लेकर समर्पण का निर्णय लिया।

- बीके सुरभि, बीकॉम, इंद्रगंज, ग्वालियर, मप्र

माता-पिता की इकलौती बेटी हूं। संयम के मार्ग पर चलने के मेरे संकल्प से वह भी बहुत खुश हैं। बचपन से ही संसार से मोह नहीं था। सादगीभरा जीवन बहुत पसंद है, इसलिए ब्रह्माकुमारी बनने का संकल्प लिया। यहां दिए जा रहे ज्ञान में कोई अंधश्रद्धा की बात नहीं है। राजयोग से हम मन के मालिक बन जाते हैं।

- बीके भाग्यश्री, बीए, संभाजी नगर, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अब तक हमने सुना है कि तुम हो एक अगोचर सबके प्राण पति... आज वह संकल्प पूरा हुआ है। आज मैंने भगवान को पति परमेश्वर के रुप में स्वीकार किया है। दुनिया में लोग बाहरी श्रृंगार करते हैं लेकिन हमने सुख-शांति, प्रेम को अपने जीवन का श्रृंगार बनाया है। दृढ़ प्रतिज्ञा, संकल्प लिया कि भगवान की सेवा में अपनी पूरा जीवन लगाएंगे।

- बीके किरण, बीएससी, डीसीए, सागर, मप्र

परमेश्वर ही एकमात्र ऐसे पति हैं जो कभी दुख नहीं देते हैं। वह तो हमें दुःखों से छुड़ाते हैं। दुनिया के रिश्तों में दुख मिल सकता है लेकिन परमपिता परमेश्वर से रिश्ता जोड़ने के बाद वह हमारे जन्मोंजन्म के लिए भाग्य बना देते हैं। मैं 13 साल से राजयोग ध्यान का अभ्यास कर रही हूं। ब्रह्माकुमारी बनकर जिंदगी का मकसद पूरा हो गया। -

बीके हेमलता, बीए, पीजीडीसीए सागर, मप्र

मेरा परम सौभाग्य है कि पति के रुप में बुद्धि से परमात्मा को स्वीकारा है। इससे मेरा तो कल्याण होगा ही साथ ही समाज का भी कल्याण होगा। समाज के व्याप्त बुराइयों को दूर करना, लोगों को सद्मार्ग का रास्ता दिखाना, परमात्मा के सत्य ज्ञान को बताया, राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा देना ही अब जीवन का परम लक्ष्य है। माता-पिता बहुत खुश हैं।

- बीके रजनी, बीए, पीजीडीसीए सागर, मप्र

मेरे ताऊजी व अन्य परिवार के सदस्य वर्षों से संस्थान से जुड़े हैं। जब मैं बड़ी हुई तो मेरा भी झुकाव हो गया। यहां के ज्ञान में सबसे अच्छी बात मुझे लगी कि हम ब्रह्माकुमारी बनकर पूरे विश्व की सेवा और कल्याण कर सकते हैं। परमात्मा के साथ पिता और दोस्त का रिश्ता है। अब पूरा जीवन सेवा में अर्पित करने जा रही हैं। जीवन का अनमोल दिन है।

- बीके सविता, राजगढ़, मप्र

मेरे परिवार के सभी सदस्य ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े हुए हैं। बचपन से ही घर में अध्यात्म का माहौल और सभी को मेडिटेशन करते देखा तो धीरे-धीरे मेरा भी झुकाव हो गया। मनुष्य के साथ शादी करते हैं तो वह एक जन्म के साथी बनते हैं लेकिन परमात्मा को साथी बनाने से वह 21 जन्म के लिए हमारा साथ निभाते हैं। दुखों से मुक्त करते हैं।

- बीके दीपिका, 12वीं, डीसीए, हाजी अली, मुंबई।

मैं पांच साल की थी तब मेरे घरवाले ब्रह्माकुमारीज के संपर्क में आए। बचपन से ही दीदियों को देख रही हूं। दीदियों के प्यार-स्नेह के कारण ब्रह्माकुमारी जीवन अच्छा लगा। 15 साल से सेवाएं प्रदान कर रही हूं। विश्व सेवा से हमारा भी भाग्य बनता है और दूसरों का भी भाग्य बनता है। भाग्यशाली हूं कि हमारे पति ही परमेश्वर हैं।

- बीके ललिता, बीए, ईस्ट गोदावरी, आंध्रप्रदेश

विश्व सेवा से हमारे साथ दूसरों का भी भाग्य बनता है। इसी पावन लक्ष्य के साथ ब्रह्माकुमारी बनकर आजीवन समाजसेवा का संकल्प लिया। आज का दिन मेरे जीवन का सबसे अनमोल और यादगार दिन है। मेरे फैसले से माता-पिता सभी बेहद खुश और संतुष्ट हैं। बचपन से ही पवित्र जीवन पसंद था इसलिए यह मार्ग चुना।

- बीके रामलक्ष्मी, बीए, ईस्ट गोदावरी, आंध्रप्रदेश

दुनिया का सबसे बड़ा बल पवित्रता का बल है। पवित्रता के बल से ही सुखमय, सतयुगी दुनिया की स्थापना होगी। मैंने परमात्मा को जीवनसाथी के रुप में चुना है जो कभी दुख नहीं देता। सदा सुख-शांति देता है। हम एक जन्म परमात्मा के बताए मार्ग पर अर्पण करते हैं तो वह जन्मोंजन्म के लिए हमारा भाग्य बना देते हैं।

- बीके प्रतिभा, बीएससी, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर मुझे सबसे अच्छी बात लगी कि यहां किसी से कोई भेदभाव नहीं किया जाता है। सभी से एक समान व्यवहार किया जाता है। इस बात ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया। बचपन से ही अध्यात्म के प्रति लगाव था। इसलिए ब्रह्माकुमारी के रुप में अपना जीवन समाजसेवा के लिए समर्पित करने का फैसला किया।

- बीके रोशनी, बीए, लश्कर, ग्वालियर

चार दिवसीय नेशनल इलेक्ट्रानिक मीडिया ट्रेनिंग आयोजित

देशभर से आए ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने सीखी पत्रकारिता की बारीकियां

250 युवा भाई-बहनों ने लिया भाग, देश के नामी वरिष्ठ पत्रकारों ने दिया प्रशिक्षण

शिव आमंत्रण, आबू रोड। युवा ब्रह्माकुमार, राजयोगी भाई-बहनों ने समाज में ज्ञान-ध्यान की शिक्षा के साथ अब मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता को बढ़ावा देने का बीड़ा उठाया है। इसके लिए वह बाकायदा पत्रकारिता की बारीकियां सीख रहे हैं। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में चार दिवसीय नेशनल इलेक्ट्रानिक मीडिया ट्रेनिंग आयोजित की गई। इसमें देशभर से 250 से अधिक भाई-बहनों ने पत्रकारिता की बारीकियां सीखी। ट्रेनिंग में देश के नामचीन पत्रकारों ने प्रैक्टिकल में समाचार लेखन, फीचर स्टोरी, कैमरा हैंडलिंग, विजुअल, एंकरिंग, पीटूसी, वॉइस ओवर, लाइव रिपोर्टिंग, फोनो, वॉकथ्रू के बारे में विस्तार से जानकारी दी। समापन पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र, मधुबन न्यूज की प्रेस आईडी, माइक आईडी प्रदान की गई।

पत्रकार में लिखना और पढ़ना दो बातों का होना जरूरी है

मप्र भोपाल से आए बंसल न्यूज के चैनल हैड वरिष्ठ पत्रकार शरद द्विवेदी ने कहा कि एक अच्छा पत्रकार वही होता है जो आजीवन लिखता और पढ़ता है। पत्रकार में लिखना और पढ़ना दो बातों होना जरुरी है। रोज नया सीखें। अपने ज्ञान को लगातार अपडेट करते हैं। यदि समय के साथ चलना है तो टेक्नोलॉजी और नॉलेज से अपडेट रहना होगा। हमारा चीजों को देखने का नजरिया आम लोगों से अलग हो। हर चीज की गहराई में जाएं, विश्लेषण करें।

सोशल मीडिया का उपयोग सावधानी से करें

दिल्ली से आए आजतक के एक्जीक्यूटिव एडिटर रमेश तिवारी ने कहा कि आज सोशल मीडिया के जमाने में हर व्यक्ति पत्रकार बन गया है। सही और गलत दोनों तरह की सूचनाओं की बाढ़ आ गई है। ऐसे में हमारा दायित्व है कि जो सूचना या जानकारी हमारे पास आती है तो उसकी सत्यता की पुष्टि करने के बाद ही फारवर्ड करें। सोशल मीडिया का उपयोग बहुत ही सावधानी के साथ करें। आज सभी अपनी भावनाएं, संवेदनाएं व्यक्त कर सकता है।

हमारी खबर का प्रजेंटेशन हो बेहतर से बेहतर

दिल्ली से आए एबीपी न्यूज के सीनियर एडिटर अभिषेक उपाध्याय ने कहा कि एक पत्रकार के लिए सबसे महत्वपूर्ण होता है प्रजेंटेशन। खबर तो सभी के पास होती है लेकिन आप जब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए रिपोर्टिंग कर रहे होते हैं तो इसमें आपका प्रजेंटेशन सबसे महत्वपूर्ण और अहम होता है। जितना बेहतर, इनोवेटिव, क्रिएटिव, स्पष्ट और रोचक तरीके से नए तथ्यों के साथ खबर को पेश करते हैं तो दर्शक उतने ही उत्सुकता से देखता है।

मूल्यों को बढ़ावा देने की पहल सराहनीय

दिल्ली से पधारे दूरदर्शन के सलाहकार संपादक मनीष वाजपेयी ने कहा कि मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता के पहले हमारे जीवन में मूल्य हों। जब हमारा जीवन मूल्यों व आध्यात्मिकता से भरपूर होगा, समाज के लिए कुछ देने का भाव, तभी हम कुछ अच्छा कर पाएंगे। ब्रह्माकुमार भाई-बहनों की मीडिया से समाज में मूल्यों को बढ़ावा देने की पहल सराहनीय है। आशा है कि आप अपने ज्ञान को मीडिया के माध्यम से बदलाव में लगाएंगे।

शुभारंभ पर इन्होंने भी रखे अपने विचार...

- आबू रोड एसडीएम गोविंद सिंह ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज द्वारा मीडिया के माध्यम से समाज में सकारात्मक माहौल बनाने, लोगों को मोटिवेट करने और आध्यात्मिक ज्ञान देने का जो कार्य किया जा रहा है वह बहुत ही सराहनीय है।
- ट्रेनिंग का शुभारंभ करते हुए कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई ने कहा कि आज के समय में मीडिया की बहुत बड़ी भूमिका है। मीडिया से ही जन-जन तक बाबा का संदेश पहुंचेगा।
- मीडिया निदेशक बीके करुणा भाई ने कहा कि आप सभी पत्रकार अपनी कलम और रिपोर्टिंग के माध्यम से लोगों को आत्मा-परमात्मा का ज्ञान बताएं। लोगों को सच्चाई बताएं कि परमात्मा इस धरा पर आकर अपना कार्य कर रहे हैं।
- वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके गीता दीदी ने कहा कि मीडियाकर्मियों से सभी के लिए आशाएं हैं। आप सभी भगवान की आशा को पूर्ण करने वाले आशा के दीपक, चैतन्य सितारे हो।

मन में बिठा लें मैं दुनिया का सर्वश्रेष्ठ पत्रकार हूं...

छग रायपुर से आईं भारत एक्सप्रेस की स्टेट एडिटर प्रियंका कौशल ने कहा कि अच्छे पत्रकार में आत्मविश्वास, धैर्य और साहस होना जरुरी है। आज से अपने अंतर्मन में बिठा लें कि मैं आत्म विश्वास से भरपूर दुनिया का सर्वश्रेष्ठ पत्रकार हूं। मैं रुहानी पत्रकार हूं। परमात्मा की प्रत्यक्षता मुझे ही करना है। खुद को अपडेट रखने के लिए रोज अखबार जरुर पढ़ें। जितना आप पढ़ेंगे उतना अच्छा लिख और बोल पाएंगे। पढ़ने से हमारे शब्दकोश बढ़ता है।

मीडिया से ही होगी बाबा की प्रत्यक्षता

ब्रह्माकुमारीज के पीआरओ, मधुबन न्यूज के डायरेक्टर व ट्रेनिंग के संयोजक बीके कोमल ने कहा कि यहां चार दिन तक जो आप सभी ने पत्रकारिता की बारीकियां सीखी हैं, उसका अपने सेवा स्थानों पर प्रैक्टिकल में उपयोग करें। बाबा ने भी कहा है कि प्रत्यक्षता मीडिया के माध्यम से ही होगी, इसलिए आप अभी से तैयार रहें। अपनी नॉलेज को बढ़ाते रहें। इस दौरान उन्होंने प्रैक्टिकल में न्यूज एंकरिंग, वॉकथ्रू, पीटूसी, वॉइस ओवर के बारे में गहराई से बताया।

मीडियाकर्मियों से अच्छे संबंध हों...

- भोपाल से पधारीं ब्लेसिंग हाउस की निदेशिका व मधुबन न्यूज जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके डॉ. रीना दीदी ने कहा कि मीडिया की सेवा में सबसे महत्वपूर्ण है हमारा पब्लिक रिलेशन। जितना हमारे मीडियाकर्मियों से स्नेहपूर्ण, आत्मीयता रिश्ते होंगे तो वह सेवाओं में सहयोगी बनेंगे।
- शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक बीके पुष्पेंद्र ने फीचर स्टोरी लेखन के बारे में बताते हुए कहा कि तथ्यों के साथ रोचक, रचनात्मक, कलात्मक तरीके से समाचार का प्रस्तुतिकरण ही फीचर लेखन है।
- भोपाल जोन के मधुबन न्यूज के ब्यूरोचीफ बीके रावेंद्र ने कहा कि आज के समय में हमें सोशल मीडिया के सभी प्लेटफार्म, टेक्नीकल जानकारी होना बहुत जरुरी है।
- मधुबन न्यूज की बीके पूजा बहन, बीके शिवांगी बहन, बीके तुलसी बहन, बीके मोहित, बीके विनय ने भी न्यूज भेजने की प्रक्रिया के बारे में बताया।

टीवी न्यूज बनाने की प्रक्रिया

शॉट्स: किसी कार्यक्रम के अलग-अलग 30 सेकंड के शॉट्स लें। जैसे- 30 सेकंड स्टेज, अतिथि का वक्तत्व, पब्लिक, कार्यक्रम का बैनर आदि के शॉट्स लिए जा सकते हैं।
बाइट: बाइट का शॉट्स 30 सेकंड से ज्यादा का न हो। जिसकी बाइट ले रहे हैं उसका नाम, पद, स्थान का उल्लेख स्क्रिप्ट में जरुर करें।
टिक-टैक: घटना स्थल या मौके पर रिपोर्टर और व्यक्ति के मध्य संवाद को टिक-टैक कहते हैं। फुटेज दो मिनट से ज्यादा का न हो।
वॉक थ्रू: रिपोर्टिंग के दौरान घटनास्थल पर चलते हुए रिपोर्टिंग करना, क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है का विवरण ही वॉक थ्रू कहलाता है।
पीटीसी (पीस टू कैमरा): पीटीसी के माध्यम से मौके पर ही रिपोर्टर घटना के संबंध में विवरण पेश करता है उसे पीटीसी कहते हैं।

ध्यान से लेकर दौड़ में बच्चों ने दिखाया हुनर

राजयोगी किड्स समर कॉर्निवाल आयोजित, देशभर से भाग लेने पहुंचे बच्चे

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान। राजयोग जीवनशैली को कैसे सकारात्मक बना देता है, इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं राजयोगी किड्स। शांतिवन मुख्यालय में शिक्षा प्रभाग द्वारा आयोजित चार दिवसीय राजयोगी किड्स समर कॉर्निवाल में अद्भुत नजारा देखने को मिला। यहां अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त में 4 बजे ध्यान में रमे बच्चों को देख हर किसी के मुख से वाह-वाह निकला। पूरे कॉर्निवाल के दौरान बच्चों में गजब का अनुशासन, नियम और संयम देखने को मिला। 12 से अधिक तरह की प्रतियोगिताओं में बच्चों ने पूरे दमखम के साथ अपनी प्रतिभा दिखाई। समापन पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को सम्मानित किया गया।

बेटी बचाओ का संदेश: चित्रकला प्रतियोगिता में बच्चों ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, आधुनिक युग की नारी, बेटी भारत की शान, स्वच्छता अभियान, भारत की सांस्कृतिक धरोहर, योगी की ध्यान मुद्रा की आकृतियों को मन के भावों के जरिए उकेरा। कई बच्चों ने पर्यावरण प्रदूषण, जल संरक्षण को लेकर पेंटिंग बनाई। योग का महत्व बताते हुए भारतीय पुरातन संस्कृति को दिखाया। लेखन प्रतियोगिता में भी बच्चों ने अपने लेखन कौशल का परिचय कराया।

नशे से मुक्ति के लिए भारतमाता की पुकार : नुक्कड़ नाटक के माध्यम से बच्चों ने बीड़ी, सिगरेट, पान-तंबाकू, ड्रग्स के रोल में अपनी अदाकारी से सभी को सामाजिक संदेश देने के साथ मन मोह लिया। बच्चों ने एक-एक नशे की लत और उससे होने वाले नुकसान के बारे में बताते हुए दूर रहने का आह्वान किया।

ये प्रतियोगिता कराई गईं

- मेडिटेशन
- चित्रकला
- नृत्य
- गायन
- नींबू रेस
- बोरा रेस
- खो-खो
- भाषण
- निबंध लेखन
- दौड़
- जुंबा
- नुक्कड़ नाटक

एक नजर

1000 से अधिक बच्चों ने लिया भाग

04 चार दिन चला कार्निवाल

12 से अधिक तरह की स्पर्धाएं कराईं

08 ग्रुप में बच्चों को बांटा गया

तीन साल का बच्चा भी दौड़ा

बच्चों को दौड़ते हुए देखकर छोटे बच्चों में भी उत्साह दिखा। इस पर तीन साल से आठ साल के बच्चों के लिए भी अलग से दौड़ प्रतियोगिता कराई गई। इसमें छोटे बालकों ने भी सौ मीटर की रेस पूरी की। पूरे आयोजन के दौरान बच्चों ने जमकर आनंद लिया। वहीं रस्सा कस्सी में भी बच्चों ने खूब एंजॉय किया।

आप सभी बच्चे बहुत भाग्यशाली हैं कि परमात्मा के घर में आए हैं। यहां जो शिक्षा मिलती है उससे आपका जीवन महान बन जाएगा। संस्थान की शुरुआत में भी सबसे पहले बच्चों से ही मूल्य और नैतिक शिक्षा की शुरुआत की गई थी। वरिष्ठ दादियों ने भी बच्चों के रुप में मूल्य शिक्षा ली और अपने साथ लाखों लोगों का जीवन श्रेष्ठ बना दिया। बच्चे मन के सच्चे होते हैं। परमात्मा की भी बच्चों पर विशेष नजर होती है, आशीर्वाद होता है। आप सभी पॉवरफुल, पीसफुल आत्माएं हैं। सदा शांति, खुशी और उमंग-उत्साह में रहें। ऐसा बनें कि आपको देखकर लोगों में खुशी पैदा हो जाए।
- डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़

इन फैकल्टीज ने बच्चों को पढ़ाया मूल्य शिक्षा का पाठ...

शिक्षा प्रभाग की राष्ट्रीय समन्वयक बीके सुमन बहन, मुख्यालय समन्वयक बीके शिविका बहन, अजमेर से आईं बीके योगिनी बहन, आरजे बीके श्रीनिधि, मोटिवेशनल स्पीकर बीके रुपेश, दिल्ली से आए बीके दिव्यांशु, कर्नल विकास राव चौहान ने बच्चों को मोटिवेट किया। मधुरवाणी ग्रुप के बीके सतीष भाई, बीके भानू भाई ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

दादियों के नाम पर बनाए गए आठ ग्रुप में बांटा

बच्चों को एक्टीविटीज कराने के लिए अलग-अलग ग्रुप बनाए गए। इन ग्रुप के नाम वरिष्ठ दादियों के नाम पर दादी मनोहर हाउस, दादी निर्मल शांता हाउस, दादी जानकी हाउस, दादी गुलजार हाउस, दादी चंद्रमणि हाउस, दादी प्रकाशमणि हाउस, दादी बृजेन्द्रा हाउस, दादी रतनमोहिनी हाउस के नाम पर रखे गए।

पूरी दमखम के साथ दौड़े बच्चे, दर्शकों ने बढ़ाया हौसला

कॉर्निवाल के तीसरे दिन नींबू रेस, चम्मच रेस और बोरा रेस आयोजित की गई। इसमें पांच साल से लेकर 15 साल के बच्चों ने दौड़ लगाई। प्रतियोगिता के लिए बच्चों के उम्र के हिसाब से अलग-अलग ग्रुप बनाए गए। फाइनल राउंड में अलग-अलग ग्रुप के प्रथम, द्वितीय,तृतीय आए विजेताओं को दौड़ाया गया।
इसमें पांच बच्चों का चयन किया गया। समापन पर बच्चों को तपोवन का भ्रमण कराया गया। स्वस्थ रहने के लिए जुंबा डांस के जरिए एक्सपर्ट ने एक्सरसाइज के टिप्स बताए। इसमें बच्चों ने जमकर मनोरंजन किया।

संपादकीय

आत्मा की स्वतंत्रता ही वास्तव में सच्ची आजादी

15 अगस्त को हमारा देश इस वर्ष 77वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहा है। देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए अनेक वीर-वीरांगनाओं ने अपनी कुर्बानी दी जिसे हम भूल नहीं सकते। हमें उस गुलामी से तो मुक्ति मिल गई लेकिन हम सबके मन के अंदर अनेक व्यसन, बुराई, विकार रूपी अंग्रेज घुसकर मन को गुलाम बना कमजोर करते जा रहे हैं। हमारे देश की जनसंख्या की 37% युवा जो कोई ना कोई बुराई, विकारों से ग्रसित होता जा रहा है। 140 करोड़ की जनसंख्या वाला यह देश युवाओं के स्वर्णिम भविष्य पर निर्भर करता है। आज जो युवा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष व्यसन, बुराई से आजाद होने के लिए जब तक राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास निरंतर नहीं करेंगे तब तक इन व्यसन बुराइयों से आजादी नहीं मिल सकती। इसलिए राजयोग द्वारा अपने विकारों पर जीत पाकर मन जीते जग जीत बनकर आत्मा को सच्ची आजादी देने के लिए परमात्मा की याद में अपने को शरीर के जगह आत्मा महसूस करें। तभी आत्मा सच्ची आजादी पा सकती है। तभी हमारा समाज, देश दुनिया अपराधों, बीमारियों दुखों से मुक्त होकर स्वर्णिम युग की तरफ अग्रसर होगा। भारत विश्व गुरु बनकर पूरे विश्व पर राज करेगा। इसलिए आत्मा की स्वतंत्रता ही हमारी सच्ची आजादी है। मन की आजादी के लिए एकमात्र जरिया अध्यात्म ही है। अध्यात्म में ही मन की सभी समस्याओं का समाधान समाया हुआ है।

बोध कथा/जीवन की सीख

परमात्मा की आवाज

एक व्यक्ति को रास्ते में यमराज मिल गए वो व्यक्ति उन्हें पहचान नहीं सका। यमराज ने पीने के लिए पानी मांगा उस व्यक्ति ने उन्हें पानी पिलाया। पानी पीने के बाद यमराज ने बताया कि वो उसके प्राण लेने आए हैं लेकिन चूँकि तुमने मेरी प्यास बुझाई है इसलिए मैं तुम्हें अपनी किस्मत बदलने का एक मौका देता हूं। यह कहकर यमराज ने उसे एक डायरी देकर कहा तुम्हारे पास 5 मिनट का समय है। इसमें तुम जो भी लिखोगे वही होगा, लेकिन ध्यान रहे केवल 5 मिनट। उस व्यक्ति ने डायरी खोलकर देखा तो पहले पेज पर लिखा था कि उसके पड़ोसी की लॉटरी निकलने वाली है और वह करोड़पति बनने वाला है। उसने वहां लिख दिया कि पड़ोसी की लॉटरी न निकले। अगले पेज पर लिखा था उसका एक दोस्त चुनाव जीतकर मंत्री बनने वाला है उसने लिख दिया कि वह चुनाव हार जाए। इसी तरह वह पेज पलटता रहा और अंत में उसे अपना पेज दिखाई दिया। जैसे ही उसने कुछ लिखने के लिए अपना पैन उठाया यमराज ने उसके हाथों से डायरी ले ली और कहा वत्स! तुम्हारा 5 मिनट का समय पूरा हुआ, अब कुछ नहीं हो सकता। तुमने अपना पूरा समय दूसरों का बुरा करने में निकाल दिया और अपना जीवन खतरे में डाल दिया। अतः तुम्हारा अन्त निश्चित है। यह सुनकर वह व्यक्ति बहुत पछताया लेकिन सुनहरा समय निकल चुका था। अब उसके पास सिवाए पछतावे के अलावा कुछ नहीं था। यही स्थिति आज समाज में ज्यादातर लोगों की है।

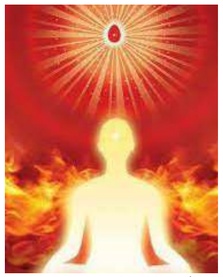

आज दुख का कारण यही है कि व्यक्ति अपने अवगुणों, बुराइयों, कमी-कमजोरियों को देखने के बजाय दूसरों के अवगुणों को देखने में ही लगा रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता है। इसलिए जितना हो सके अपना समय परमात्मा के ध्यान, परमात्म ज्ञान को जीवन में उतारने और खुद को महान, श्रेष्ठ बनाने में लगाएं। सदा अपना निरीक्षण करते हैं और कमियों को दूर करते रहें।

संदेश : यदि ईश्वर ने आपको कोई शक्ति प्रदान की है तो कभी किसी का बुरा न सोचो न करो। दूसरों का भला करने वाला सदा सुखी रहता है और ईश्वर की कृपा सदा उस पर बनी रहती है। हम दूसरों के प्रति अच्छी सोच रखेंगे, दूसरों के कल्याण का भाव हमारे मन में होगा तो हमारा कल्याण अपने आप हो जाता है। प्रण लें आज से हम किसी का बुरा नहीं करेंगे।

मेरी कलम से

बीके राव,
फाइटर पायलट,
इंडियन एयरफोर्स

राजयोग का कमाल, फैक्चर प्रॉब्लम के बाद भी मुझे सेफ वन मिला

चार टाइप की एयरक्रॉफ्ट सुखोई को उड़ाया

शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान।

पिछले साल मैं 20 फीट ऊंची सीढ़ी से गिर गया था। गिरते-गिरते मेरे मुख से बाबा निकला। काफी दर्द हो रहा था। मैं 10 दिन डॉक्टर के पास नहीं गया, सबसे बड़ा सुप्रीम डॉक्टर शिवबाबा है। उसके बाद मैंने जब एक्स-रे करवाया तो हमारा हड्डी फैक्चर निकला। डॉक्टर कह रहे थे 10 दिन तक कैसे रहे। वहीं डेढ़ महीने के अंदर मैंने साइकिलिंग शुरू कर दी। फिर तीन महीने के अंदर 750 किलोमीटर ड्राईविंग करके मुंबई गया। वहां बड़े डाक्टरों ने भी माना कि यह बिना मेडिटेशन के संभव नहीं है।
20 जनवरी 2022 को आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान का

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी ने उद्घाटन किया, जिसमें हमने 33 साइकिलिंग का प्रतिनिधित्व कर 55 किलोमीटर का सफर तय किया। मैं आज भी रोज दस किलोमीटर साइकिलिंग करता हूं। मेरा जो भी हीलिंग हुआ है, वह मेडिटेशन-व्यायाम से हुआ। 20 साल पहले मुझे सर्वाइकल पोन्डलाईटिस तीसरे लेवल में हो चुका था। मैंने अब तक सर्जरी नहीं कराई है। वर्ष 2012 में तीन साल मेडीटेशन अभ्यास के बाद पैरा जंपिंग के लिए भी तैयार हो गया। जिसमें 28 किलो का पैक लेकर जम्प करना होता है। हवाई जहाज में सबकुछ बढ़िया चल रहा है और उससे जंप करना है, यह बाबा की याद में ही हो सकता है। मैं विश्व का पहला व्यक्ति हूं जो इतनी बड़ी फैक्चर प्राब्लम के बाद भी मुझे वापस सेफ वन मिला। हमने फ्रंट रोल में शामिल होकर सेवानिवृत्ति के दस दिन पहले भी कैप्टन बनकर फ्लाई किया और सुखोई-30, मिग-21, हाक और माइकोलाईव चार टाइप की एयरक्राप्ट को उड़ाया।
मेरा अनुभव है कि दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति मन की शक्ति है। राजयोग मेडिटेशन से हमारी मन की शक्ति पावरफुल हो जाती है।

संपूर्ण समर्पण द्वारा सर्वोच्च दर्शन का साक्षात्कार

जीवन का मनोविज्ञान — भाग - 61

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर (स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान।

जीवन में चेतना की चैतन्यता का साक्षात्कार हो जाना परम सत्ता के प्रति अगाध श्रद्धा और आस्था की परिणति है जो आत्मिक अवस्था में स्मृति स्थिति द्वारा स्वरूपगत परिष्कार हेतु सदा मददगार सिद्ध होती है जिसमें निर्मल अंतःकरण के निमित्त निर्माण से आत्मिक निश्चिंता का नैसर्गिक परिवेश स्वयमेव निर्मित हो जाता है। मनुष्य जन्म की प्राप्ति के पश्चात सनातन धर्म की सभ्यता एवं संस्कृति का समग्र परिदृश्य बड़े भाग्य मानुष तन पावा की उच्चता के सानिध्य में गतिशील जीवन की महानता को प्राप्त करने हेतु अव्यक्त स्वरूप में पवित्र आचरण द्वारा उदाहरणमूर्त चेतनता के रूप में परिवर्तित हो जाता है जो सर्वगुण संपन्नता के परिश्ता स्वरूप से साक्षात्कारमूर्त चेतनता की संपूर्णता को सदा ही आत्मिक समृद्धि के स्वरूप में प्रकट करता रहता है।

आत्मगत समर्पण का जीवंत उदाहरणः
आत्मिक पवित्रता की उच्चतम स्थिति से युक्त जीवन के परिवेश में विशाल हृदय एवं विराट मस्तिष्क के भावनात्मक और वैचारिक पक्ष की श्रेष्ठता से आध्यात्मिक परिदृश्य में संपूर्ण समर्पण द्वारा सर्वगुण संपन्नता की महानतम उपलब्धि प्राप्त होती है जिसमें चिंतनशील चेतना के गतिशील स्वरूप से आत्मगत सर्वोच्चता के शिखर पर पहुंचना सुनिश्चित हो जाता है। मानव जाति जब आत्मशक्ति को स्वीकार कर लेती है तब स्वयं की दृष्टि को विकसित करना संभव हो जाता है और व्यक्ति दृष्टि बदलने से सृष्टि बदलने के गूढ़तम रहस्य को आत्मसात करके 'जीवन लक्ष्य'

के अंतर्गत उमंग-उत्साह द्वारा दृष्टिगत महानता के संदर्भ और प्रसंग से पुरुषार्थ की गतिशीलता में अभिवृद्धि करके धारणात्मक उच्चता के ज्ञान, योग से धर्मगत सेवाभाव को पूर्णतः अंगीकार करना आत्मगत समर्पण का उदाहरण बन जाता है ।
आधारभूत चेतनता की वैभवपूर्ण उच्चताः
जीवन में चेतना की चैतन्यता का साक्षात्कार हो जाना परम सत्ता के प्रति अगाध श्रद्धा और आस्था की परिणति है जो आत्मिक अवस्था में स्मृति, स्थिति द्वारा स्वरूपगत परिष्कार हेतु सदा मददगार सिद्ध होती है, जिसमें निर्मल अंतःकरण के निमित्त निर्माण से आत्मिक निश्चिंता का नैसर्गिक परिवेश स्वयमेव निर्मित हो जाता है। मनुष्य जीवन को हीरे तुल्य बनाने की आत्मिक सतोप्रधान अवस्था अर्थात लगन में मगन रहने का अनवरत जुड़ाव 'मन, बुद्धि एवं संस्कार की पवित्रता' से संबद्ध रहता है जिसमें निर्विकारी कर्मणा में निराकारी, निरंहकारी द्वारा पुरुषार्थगत निर्विघ्नता का आत्मबल संपूर्ण समर्पण के अनादि स्वरूप से आधारभूत चेतनता की वैभवपूर्ण उच्चता के समदृश्य सदा बना रहता है।
सनातन धर्म की सभ्यता एवं संस्कृतिः
आत्मानुभूति के केंद्र में स्वयं को स्थापित कर देने पर निर्धारित मनोदशा से अपेक्षित परिवर्तन, परिणाम, परिमार्जन, परिवर्धन एवं परिष्कार की संभावनाएं बढ़ जाती हैं जिससे उपराम स्थिति में आदि स्वरूप द्वारा उद्धारमूर्त चेतनता की अभिव्यक्ति सुनिश्चित हो जाती है जो कर्मातीत अवस्था के पूज्य स्वरूप में अनुभवीमूर्त चेतनता, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मंगलकारी और वरदानी आशीष प्रदान करते हुए प्रस्फुटित हो जाती है। मनुष्य जन्म की प्राप्ति के पश्चात सनातन धर्म की सभ्यता एवं संस्कृति का समग्र परिदृश्य बड़े भाग्य मानुष तन पावा की उच्चता के सानिध्य में गतिशील जीवन की महानता को प्राप्त करने हेतु अव्यक्त स्वरूप में पवित्र आचरण द्वारा उदाहरणमूर्त चेतनता के रूप में परिवर्तित हो जाता है जो सर्वगुण संपन्नता के परिश्ता स्वरूप से साक्षात्कारमूर्त चेतनता की संपूर्णता को सदा ही आत्मिक समृद्धि के स्वरूप में प्रकट करता रहता है।
चैतन्यता के स्वरूप में देवत्व की गरिमाः चेतनागत स्वरूप में संपूर्ण अवस्था के उच्च आयाम की अभिलाषा ही अंतर्मन की अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण आधार होता है जो आत्म तत्व को समर्पित अवस्था की ओर गतिशीलता प्रदान करने में मददगार बन जाता है जिसमें आत्मिक चैतन्यता के अतीत , आगत एवं अनंत स्वरूप में देवत्व की गरिमामई वास्तविकता समाहित रहती है जो सर्वगुण संपन्नता के समृद्धशाली स्वरूप हेतु सदा आत्मा को संपूर्ण समर्पण के लिए अनुप्राणित करती रहती है ।
आत्मा के नैसर्गिक अस्तित्व में अजर-अमर-अविनाशी, अचल-अडोल एवं स्थितप्रज्ञता का गुणात्मक स्वरूप सन्निहित होता है जो जीवात्मा को साक्षी दृष्टा स्थिति में स्थित रहकर स्वयं की अवस्था को पवित्रतम बनाए रखने हेतु स्मृतिगत स्थितियों की निरंतरता से चित्त को परिष्कृत चिंतनशीलता की ओर उन्मुख करता रहता है, जिससे परम सत्ता की विराटता में समर्पित होकर आत्मिक संपन्नता की प्राप्ति को सहजता में परिवर्तित किया जा सकता है।

"जो धर्म, सत्य, क्षेष्ठता और परमेश्वर के सामने झुकता है। उसका आदर समस्त संसार करता है।"
छत्रपति शिवाजी महाराज

"मनुष्य का गौरव और आत्मसम्मान उसकी सबसे बड़ी कमाई होती है।"
महाराणा प्रताप सिंह

पुण्यतिथि पर विशेष

दादी कहती थीं- मैं तो श्रीकृष्ण की मीरा बनूंगी

25 अगस्त 2023
14वीं पुण्यतिथि पर विशेष

ब्रह्माकुमारीज संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि
जन्म : 1922, अव्यक्त आरोहण : 2007

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि एक ऐसी महिला थी जो इस धरा पर आध्यात्म का प्रकाशपुंज बनकर आई और अपने ज्ञान प्रकाश की शक्ति से लाखों लोगों के जीवन को आलोकित करके अव्यक्त हो गईं। वर्ष 1969 में ब्रह्माकुमारीज के संस्थापक पितृपुरुष पिताश्री ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद आपने इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की कमान संभाली। आपकी दूरदृष्टि, कुशल प्रशासन, स्नेह, विश्व बंधुत्व की भावना और परमात्म शक्ति का ही नतीजा है कि आज संस्थान के विश्व के 137 देशों में सेवाकेंद्र हैं।
दादी प्रकाशमणि ने नारी शक्ति की ऐसी मिसाल कायम की, जिसकी आज पूरी दुनिया दाद देती है। उन्होंने अपने कुशल प्रशासन से ये साबित करके दिखाया कि जब एक नारी कुछ ठान लेती है तो असंभव कार्य को भी संभव बना देती है। दादी की ममतामयी छांव में पलकर और उनके सानिध्य में हजारों बहनें इस विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बनीं। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव कल्याण एवं महिलाओं को शक्ति स्वरूपा बनाने में लगा दिया। अपने अनुभव और परख शक्ति से अनेकों के जीवन में छिपी हुई शक्तियों को उजागर कि या और परमात्म कार्य में सहयोगी बनाया। जिससे महिलाएं समाज के हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा सकें।
बचपन से कुशाग्र बुद्धि और दूर दृष्टि का वरदान प्राप्त थाः दादीजी का पूरा जीवन हमें मूल्यनिष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा देता है। जिससे हर कोई अपने जीवन में मूल्यों को धारण कर दूसरों के लिए प्रेरणादायी बना सकता है। उन्हें बचपन से कुशाग्र बुद्धि और दूर दृष्टि का वरदान प्राप्त था। जिससे वह जीवन में आने वाली परिस्थितियों को भाप कर उनका उचित समाधान कर लेती थीं। वे बाल्यकाल में ही इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सम्पर्क में आईं। जो उस समय ओम मंडली के नाम से जाना जाता था। उनके एक झलक मात्र से ही निराश व्यक्तियों के जीवन में आशा की किरण प्रस्फुटित हो जाती थी।
ऐसी महान विभूति का जन्म अविभाज्य भारत के सिंध प्रांत में वर्ष 1922 में हुआ था जो कि अब पाकिस्तान में है। अपनी नैसर्गिक प्रतिभा, दिव्य दृष्टि और मन-मस्तिष्क के विशेष गुणों की सहज वृत्ति के कारण वे 14 वर्ष की अल्पायु में ही इस संस्था के सम्पर्क में आईं। 1936 में अपना जीवन परमात्म कार्य एवं मानव सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

बचपन से ही पूजा-पाठ करती थीं-

दादी जी के बचपन का नाम रमा था। रमा बचपन में श्रीकृष्ण की भक्त थी। सात-आठ वर्ष की उम्र से ही प्रतिदिन श्रीकृष्ण की पूजा करना उनकी दिनचर्या में शामिल था। उनके घर के पास में श्रीराधा-श्रीकृष्ण का मंदिर था। जहां वे सुबह-शाम पूजा करने जाती थीं। रात के समय श्रीकृष्ण को झूले में झुलातीं और फिर झूले से उठाकर पलंग पर सुलाती थी। यह उनका नित्य का नियम था। रमा बचपन से ही शांत और विनम्र स्वभाव की थी। बड़ों के प्रति हमेशा आदर भाव रखती थी। बचपन से ही दैवी संस्कार होने के कारण उन्होंने न कभी डांट खाई और न ही कभी किसी को अपशब्द कहे और न ही कभी सिनेमा देखने गईं। प्रतिदिन भागवत पढ़ती थी। सिंधी होने का कारण सुखमणि और ग्रंथ साहब भी पढ़ती थी। स्कूल में धर्म की क्लास में नियमित उपस्थित रहती थी। उन्होंने जप साहेब, सुखमणि और गीता का बचपन में ही अध्ययन कर लिया था।

श्रीकृष्ण के दीदार की तीव्र इच्छा

रमा के पिता स्वामी गंगेश्वरानन्द के शिष्य थे। वे व्यापारी के साथ ज्योतिषी भी थे। इससे उन्हें मालूम था कि उनकी बेटी शादी नहीं करेगी और मीरा बनेगी। दादी को कभी भी फैशन का शौक नहीं था और वे बाजार की चीजें भी नहीं खाती थी। उन्होंने बचपन में ही यह स्लोगन पक्का कर लिया था कि - मांगने से मरना भला। बचपन से दो ही बात की इच्छा थी कि या तो विष्णु या श्रीकृष्ण का दीदार हो। मैं तो श्रीकृष्ण की मीरा बनूंगी। श्रीकृष्ण का दीदार हो। दादी की एक सहेली थी जो ओम मंडली में प्रतिदिन जाती थी और जब वह योग में बैठती थी तो उसे देवी-देवताओं का साक्षात्कार होता था। उसने कहा कि चलो मैं तुझे श्रीकृष्ण से मिलाती हूं। जब रमा की दृष्टि बाबा के मस्तक पर पड़ी तो ऐसा लगा जैसे कि बाबा के मस्तक से लाइट निकल रही हो। जब रमा घर वापस आई तो वह बहुत ही बदल गई थी।

रक्षाबंधन पर विशेष...

पवित्रता का बंधन बांधने परमधाम से आए परमात्मा

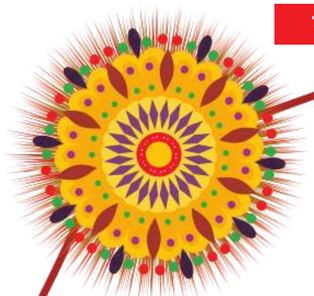

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।

स्वभाव से स्वतन्त्रता प्रेमी होने के नाते मनुष्य हर बन्धन से छूटना चाहता है। परन्तु यह न्यारा-प्यारा बन्धन है, जिसे उत्सव समझ कर सभी खुशी से बन्धवाते हैं। बन्धन भी दो प्रकार के होते हैं। एक है सांसारिक अर्थात् कर्मों का बन्धन, जो मानव को दुःख देता है और दूसरा है अविनाशी या धार्मिक बन्धन, जो मानव के लिए सुख लेकर आता है। रक्षा-बन्धन भी अपने शुद्ध रूप में एक आध्यात्मिक रस्म है, लेकिन मात्र सांसारिक रूप से मनाने के कारण इस त्योहार का महत्व कम हो गया है। मुख्य रूप से इस त्योहार के पीछे यही राज बताते हैं कि इस दिन भाई-बहन को रक्षा का वचन देता है और बहन भाई को राखी बान्धती है और मुख मीठा कराती है। परन्तु देखा जाता है कि छोटा भाई शारीरिक दृष्टिकोण से भी बहन की रक्षा करने में असमर्थ हो सकता है। कई परिस्थितियों में भाई दूर रहता हैं और समय पर अपनी बहन की रक्षा करने में असमर्थ होता है। फिर यह भी बात आती है कि क्या रक्षा की जरूरत केवल बहन को ही है, भाई को नहीं होती? इतिहास तो ऐसी नारियों की गाथा से गौरवान्वित है जिनसे पुरूषों ने भी रक्षा की कामना की। जैसे झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और रानी दुर्गावती। फिर रक्षा का उत्तर दायित्व बचपन में पिता पर, जवानी में पति पर, बुढ़ापे में पुत्र पर माना जाता है। तो रक्षा की जिम्मेवारी केवल भाई पर ही क्यों रखी गई? छत्रपति शिवाजी ने गोहरबानु के साथ जो रिश्ता निभाया

भाई-बहन के पवित्र प्रेम का प्रतीक है रक्षाबंधन का पावन त्योहार

वह तो सभी जानते हैं जबकि गोहरबानु ने शिवाजी को कभी भी राखी नहीं बांधी थी, वह तो मुस्लिम धर्म को मानने वाली थी। रक्षा-बन्धन कोई स्थूल बन्धन नहीं है। धर्म अर्थात् श्रेष्ठ गुणों की धारणा। जो धर्म की रक्षा करता हैं, धर्म उसकी रक्षा करता है। जो मन-वचन-कर्म से पवित्रता की मर्यादा की रक्षा करता है, पवित्रता उसकी रक्षा करती है। बहन-भाई के नाते में पवित्रता समाए होने के नाते बहनें यह शुभ कार्य करती हैं। परन्तु सदा काल की पवित्रता देने वाले और सदा काल के लिए सुरक्षा की गारन्टी देने वाले एक परमात्मा पिता ही है। वही सर्व समर्थ हैं सृष्टि नाटक के नियन्ता हैं और इसके परिवर्तक हैं। कलियुग के अन्त में कृपानिधि परमपिता परमात्मा स्वयं अवतरित होकर हर मनुष्य आत्मा को श्रेष्ठ दृष्टि, वृत्ति और कृति की राखी बांधते हैं। इस कार्य में वह स्त्री-पुरूष का भेद न रखकर हर आत्मा को विकार ग्रसित देखकर उसे राखी बंधवाने का अधिकारी समझते हैं। जहाँ पवित्रता आ जाती है वहाँ सर्व प्राप्तियां पीछे-पीछे आती हैं। जिस प्रकार कमल का फूल न्यारा और प्यारा रहने का प्रतीक है, इसी प्रकार रक्षा-बन्धन बुराईयों से रक्षा करने वाले आध्यात्मिक बंधन में बंधने का प्रतीक है। राखी भगवान के साथ उनकी श्रेष्ठ मत पर चलने का वायदा है। रक्षा-सूत्र बांधने के साथ-साथ इस पर्व की दो रस्में और भी हैं। एक है मस्तक पर तिलक लगाना और दूसरा है मुख मीठा कराना। तिलक वास्तव में आत्म-स्मृति का प्रतीक है, कि हम सभी शरीर रुपी कुटिया की भृकुटी में स्थित चेतन, दिव्य आत्मा हैं। और मुख मीठा कराने के पीछे भाव है कि हम सभी को सदा मीठे वचन बोलें। हमारे बोलचाल और व्यवहार में कहीं भी कड़वाहट ना हो। अतः रक्षा-बन्धन वह न्यारा-प्यारा बन्धन है जो मनुष्य आत्माओं को सब बन्धनों से मुक्त कर देता है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस : देश-विदेश में दिया राजयोग ध्यान का संदेश

5500 सेवाकेंद्र पर 25 लाख लोगों ने किया योग

मन के लिए संजीवनी है राजयोग

साधकों ने शान्ति सरोवर में किया योग

रायपुर, छग

विधानसभा मार्ग स्थित शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में योग का अभ्यास किया। योग प्रशिक्षक आचार्य निलेश इसवानी ने शारीरिक स्वास्थ्य के लिए योगासनों का अभ्यास कराया। रायपुर स्थित सेवाकेन्द्रों की संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी ने कहा कि जैसे बिजली प्राप्त करने के लिए पावर हाउस से कनेक्शन करना होता है, पानी के लिए नलघर से कनेक्शन जरुरी होता है। ठीक वैसे आत्मा में शक्ति भरने के लिए सर्वशक्तिवान परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ने की जरुरत होती है। परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ने के लिए राजयोग मेडिटेशन अच्छा माध्यम है।

सभी योगों का राजा है राजयोग ध्यान

गया, बिहार

गया गाँधी मैदान में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की ओर से कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सेवाकेंद्र संचालिका बीके शीला दीदी ने कहा कि राजयोग आध्यात्मिक मन और बुद्धि द्वारा किया जानेवाला योग है जो हमारी आत्मा को ऊर्जा और संस्कारों-संस्कृति को श्रेष्ठ बनाता है। यही सभी योगों का राजा है जो हमें हमारे मन का राजा बनाना सिखाता है। सभी को शारीरिक योग के साथ सूक्ष्म प्राणायाम और राजयोग मेडीटेशन जरुर करना चाहिए। कार्यक्रम में प्रोफेसर जितेंद्र पंकज, व्यवसायी विनोद मित्तल, एटीएच संपादक मदन मोहन मिश्र मुख्य रुप से मौजूद रहे।

ब्रह्माकुमारीज़ @ दिल्ली
इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम

शिव आमंत्रण, आबू रोड। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को लेकर ब्रह्माकुमार भाई-बहनों में गजब का उत्साह देखने को मिला। संस्थान के 140 देशों में स्थित सेवाकेंद्रों पर पूरे उमंग-उत्साह के साथ योग दिसव मनाया गया। इस दौरान जहां बीके सदस्यों ने प्राणायाम के माध्यम से शरीर को स्वस्थ रखने और राजयोग मेडिटेशन के जरिए मन को स्वस्थ तंदुरुस्त रखने का संदेश दिया। इन कार्यक्रमों में 25 लाख से अधिक लोगों ने भाग लिया। वहीं दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में आयोजित समारोह में बीके भाई-बहनों सहित 20 हजार लोगों ने भाग लिया। राजयोग की गहन अनुभूति कराई गई।

विदेशी जमीं पर भी योग का उत्साह

भारतीय दूतावास में कराई योग की अनुभूति

मॉस्को, रशिया

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर मॉस्को में भारतीय दूतावास में जवाहरलाल नेहरु सांस्कृतिक केंद्र, योग स्टूडियो, आयुर्वेद केंद्र, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र सीता और ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की ओर से कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें माउंट आबू से पहुंचे बीके हरीश भाई और डॉ. एलेक्सी ने राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताया। ब्रह्माकुमारीज़ सेंटर फॉर स्पिरिचुअल डेवलपमेंट की जनरल डायरेक्टर बीके सुधा दीदी और राजयोग शिक्षिका ओल्गा स्ट्रेल्टसोवा ने कार्यक्रम में राजयोग मेडिटेशन की गहन अनुभूति कराते हुए इसे दैनिक जीवन में उपयोग करने के टिप्स बताए।

लाइफस्टाइल को पॉजीटिव बनाता है योग

कीव, यूक्रेन

शहर में बेहद कठिन हालात के बावजूद भारतीय दूतावास में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। कीव में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की प्रभारी बीके नीना बहन को इसमें विशेष रुप से आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में उन्होंने राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताते हुए कहा कि राजयोग से लाइफस्टाइल को पॉजीटिव बना देता है। माइंड पावर बढ़ जाती है। जीवन के प्रति दृष्टिकोण महान बन जाता है। इस मौके पर भारत के राजदूत हर्ष कुमार जैन, यूक्रेन-भारत सोसाइटी के अध्यक्ष ओलेग टोरगालो, डॉ. जयंत कुमार दास सहित बड़ी संख्या में नागरिकगण मौजूद रहे।

आंतरिक शक्ति बढ़ाने के सूत्र बताए

मथुरा/उप्र

मथुरा रिफाइनरी में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में पांच दिवसीय योग जागरुकता अभियान चलाया गया। इसके तहत रिफाइनरी नगर में कर्मचारियों के बच्चों के लिए दो दिवसीय समर कैंप का आयोजन किया गया। उद्घाटन क्लब सेक्रेटरी रविंद्र यादव, कर्मचारी संघ अध्यक्ष मुकेश शर्मा, एग्जीक्यूटिव मेंबर संदीप खरबंदा, अविनाश मिश्रा ने किया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कृष्णा दीदी ने राजयोग ध्यान के फायदे बताए। इंपल्स माइंड एकेडमी की डॉ. दीपा गर्ग ने आंतरिक शक्तियों के विकास के लिए सूत्र दिए। डॉ. रश्मि गोयल ने स्वस्थ जीवन शैली के टिप्स दिए।

संयम-संतुलन से जीवन बनता मूल्यवान

कामठी, महाराष्ट्र

रमाला में योग दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके प्रेमलता दीदी ने कहा कि जीवन को संतुलित करने के लिये योग ही जड़ है जो संयम और संतुलन से जीवन को मूल्यवान बनाता है। आध्यात्म से सकारात्मक चिंतन आता है। इस दौरान माजी जिल्हा परिषद उपाध्यक्ष शरद डोनेकर, डॉ. जुनघरे, युवा चेतना मंच के अध्यक्ष प्रो. डॉ. पराग सपाटे, सरपंच पंकज भाऊ, साबळे मंडल अधिकारी तहसील कार्यालय कामठी की टीना कापगते, फौजी भाई शेषराव अढाऊ मुख्य रुप से मौजूद रहे। सभी को राजयोग मेडीटेशन का अभ्यास कराया गया।

बंदियों को कराई शांति की गहन अनुभूति

बिजावर/मप्र

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर उपजेल में बंदी भाइयों के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सेवाकेंद्र प्रभारी बीके प्रीति बहन ने कहा कि संपूर्ण खुशहाल जीवन तन और मन दोनों के स्वस्थ से संभव है इसीलिए तन के योगा के साथ मन का राजयोग भी अति आवश्यक है। जहां आत्मा का संबंध सर्वोच्च सत्ता परमात्मा से जुड़ता है जिसकी सर्व शक्तियां, सर्वगुण अपने जीवन में अनुभव करते हैं। बीके शिल्पा बहन ने सभी को राजयोग मेडिटेशन की गहन अनुभूति कराई। बीके छत्रसाल भाई, बीके सुभाष भाई ने म्यूजिकल एक्सरसाइज कराई। इस दौरान जेलर मुकेश माझी विशेष रुप से उपस्थित रहे।

लोकसभा अध्यक्ष ने ब्रह्माकुमारीज़ की इस वर्ष की थीम सकारात्मक परिवर्तन का वर्ष का किया राष्ट्रीय शुभारंभ

विश्व योग दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा इन्दिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में विशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 20 हजार से अधिक लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने ब्रह्माकुमारीज़ की इस वर्ष की थीम सकारात्मक परिवर्तन का वर्ष का किया राष्ट्रीय शुभारंभ भी किया। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण से विश्व निर्माण का कार्य कर रही हैं। इस सकारात्मक परिवर्तन वर्ष में संस्था राजयोग शिक्षा के माध्यम से लोगों के अंदर नई सकारात्मक ऊर्जा, सकारात्मक चेतना तथा सकारात्मक प्रेरणा विकसित करेगा। अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन भाई, टाइम्स ऑफ इंडिया की सह संपादक नारायणी गणेश ने भी संबोधित किया।

सच्ची सुख-शांति परमात्मा ही दे सकते हैं

कजरा, बिहार

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस नरोत्तमपुर के हाई स्कूल मैदान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें विशेष रुप से सशस्त्र सीमा बल के जवानों और ग्रामीणों ने भाग लिया। कार्यक्रम में माउंट आबू से आए ब्रह्माकुमार नवीन भाई ने कहा कि मन को शांति, प्रेम, खुशी की प्यास है जो भौतिक चीजों से नहीं मिल सकती है। सच्ची शांति, प्रेम, खुशी परमात्मा निराकार शिव ही दे सकते हैं। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके श्वेता बहन ने सभी को राजयोग के माध्यम से गहन शांति की अनुभूति कराते हुए कहा कि राजयोग में सर्व रोगों की दवा है। सभी समस्याओं का समाधान समाया हुआ है।

बीके सदस्यों ने किया सूर्य नमस्कार

आबू रोड, राज.

आनंद सरोवर परिसर में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस उत्साह के साथ मनाया गया। सूर्य नमस्कार, प्राणायाम और राजयोग ध्यान का अभ्यास किया। कार्यकारी सचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि परमपिता शिव परमात्मा का संदेश आज पूरे विश्व में फैल रहा है। राजयोग मन को विकारों को दूर कर पवित्र बना देते है। योग प्रशिक्षक बीके बापू भाई ने सभी के लिए सूर्य नमस्कार कराया। साथ ही शरीर को स्वस्थ रखने के लिए जरुरी प्राणायाम-योगासन कराया और इसके फायदे बताए गए। मधुरवाणी ग्रुप के बीके सतीष, बीके भानु ने गीत की प्रस्तुति दी।

भोपाल में पीस ऑन स्ट्रीट का आयोजन

भोपाल, मप्र

होशंगाबाद रोड में शनि मंदिर के पास अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की पूर्व संध्या पर पीस ऑन स्ट्रीट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि नगर निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी उपस्थित थे। कार्यक्रम में वॉकिंग ट्रैक पर ध्यान मुद्रा में सैकड़ों ब्रह्माकुमार भाई-बहनें श्वेत वस्त्र में योग मुद्रा में बैठ कर सकारात्मकता के प्रकम्पन फैला रहे थे। ब्लेसिंग हाउस सेवाकेंद्र प्रभारी बीके डॉ. रीना दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज के सेवाकेन्द्रों में पिछले कई दशकों से प्रतिदिन प्रातः अमृतवेले 4 से 5 बजे एवं शाम 06.30 से 07.30 तक योग चलता है। बीके रावेंद्र ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

स्वयं की पहचान कराता है राजयोग

सादाबाद, उप्र

ब्रह्माकुमारीज़ सादाबाद द्वारा आयोजित "शिव शक्ति भवन" में अंतराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में दो दिवसीय भारत का प्राचीन राजयोग विषय पर ज्ञान योग तपस्या भट्टी आयोजित की गई। इसमें माउंट आबू से आए गायक बीके रमेश भाई ने राजयोग की गहराइयों के बारे में बताया। कार्यक्रम में नपं अध्यक्ष हेमलता अग्रवाल, समाजसेवी राजू अग्रवाल, क्षेत्रीय प्रभारी बीके शीला दीदी, जनपद प्रभारी बीके सीता दीदी, मुरसान के पूर्व चैयरमेन गिर्राज किशोर शर्मा, बीके भावना दीदी, सीमा बहिन, उपजिलाधिकारी संजय कुमार, सह क्षेत्रीय प्रभारी कविता दीदी मौजूद रहीं।

राजयोग हमें बनाता है इंद्रियों का राजा

मोकामा/बिहार

गौशाला रोड, श्याम मार्केट स्थित दुर्गा मंदिर प्रांगण में योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। बीके निशा दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा राजयोग मेडिटेशन सिखाया जाता हैं। जिससे मन की आंतरिक शक्तियां जागृत होती है। राजयोग इंद्रियों का राजा अर्थात स्वामी बनाता है। नगर परिषद सभापति निलेश कुमार माधव ने कहा कि योग मन-तन को तंदुरुस्त रखता है। योगाचार्य गौरव कुमार ने योगासन का अभ्यास कराया। वहीं आरपीएफ के जोनल ट्रेनिंग सेन्टर में आयोजित कार्यक्रम में बीके रोशनी बहन ने राजयोग का महत्व बताते हुए अनुभूति कराई। उपकमांडेन्ट पवन वर्मा ने आभार व्यक्त किया।

प्राणायाम कर मनाया योग दिवस

रांची, झारखंड

सेवाकेंद्र पर योग दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सेवाकेंद्र प्रभारी बीके निर्मला बहन ने राजयोग का महत्व बताया। मैनेजर अमरजीत भाई, शिक्षिका कविता मुखर्जी, शिक्षिका पद्मा रॉय मुख्य रुप से मौजूद रहीं। इस दौरान बीके भाई-बहनों ने राजयोग ध्यान के साथ विभिन्न तरह के प्राणायाम, आसन किए। साथ ही तन-मन को स्वस्थ रखने के सूत्र जाने।

ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं को सराहा

नीमच, मप्र

ब्रह्माकुमारीज़ के 'पावन धाम' सेवाकेंद्र पर आयोजित गहन राजयोग तपस्या कार्यक्रम में सबजोन संचालिका बीके सविता दीदी ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन अपने आप में शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास के लिए संपूर्ण योग है। राजयोग में चैतन्य आत्मा का सर्वशक्तिवान परमात्मा से मिलन होता है। विधायक दिलीप सिंह परिहार ने ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं की सराहना की। राजयोगी बीके सुरेन्द्र भाई, भाजपा नेता संतोष चौपड़ा, कृति के अध्यक्ष इंजी. बीएल गौर, पूर्व जिला भाजपा अध्यक्ष हेमन्त हरित, बीके श्रुति बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

आत्मा को परमात्मा से मिलाता है राजयोग

व्यावरा, मप्र

शिव वरदान भवन में अन्तराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इसमें ब्रह्माकुमारी कविता बहन ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन स्वयं परमपिता शिव परमात्मा द्वारा ब्रह्मा तन का आधार लेकर सिखाया जा रहा है। राजयोग संपूर्ण योग है। गीता में भी राजयोग को राजाई पद दिलाने वाला, इंद्रियों का राजा बनाने वाला योग बताया गया है। यह सभी योगों का राजा है। आत्मा का परमात्मा से मिलन कराता है। इस मौके पर जिला योग प्रभारी महेश त्रिवेदी, पूर्व योग शिक्षक रमेशचंद्र गुप्ता, परिवार परामर्श केंद्र के सदस्य रमेशचंद्र शर्मा, अंजलिलाल मंदिर के संरक्षक प्रताप सिंह सिसोदिया एवं ।

सुरक्षा सेवा प्रभागः राष्ट्रीय सम्मेलन

विश्व कल्याण में जुटे भाई-बहनें

शिव आमंत्रण, माउंट आबू।

ब्रह्माकुमारीज के ज्ञान सरोवर परिसर में सुरक्षा सेवा प्रभाग की ओर से स्व सशक्तिकरण द्वारा प्रेरणादायक नेतृत्व अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें संयुक्त मुख्य प्रशासिका डॉ. निर्मला दीदी ने कहा कि आप खुद को एमपॉवर करके दुनिया को लीड कर पाएंगे। आध्यात्मिकता द्वारा जो रूहानियत आती है, सभी से प्यार की अनुभूति होती है। फिर कर्म में सभी बातों को धारण करके अपना जीवन सुखी बनाना आसान होता है। लेफ्टिनेंट जनरल राजीव चौधरी ने कहा कि मुझे खुशी है कि सेवानिवृत होने से पहले मैं यहां आ पाया हूं और इन सभी शिक्षाओं को आत्मसात करने का अवसर मेरे पास है। संस्था इतनी बड़ी है फिर भी इनका कार्य सुचारू रूप से कैसे चल रहा है। इनसे सीखकर काम करना चाहिए। यहां के सभी शोधार्थियों ने पहले स्व अनुभूति करके अपना कल्याण किया है और अब विश्व के कल्याण के लिए सेवारत हो गए हैं।

सीआरपीएफ के आईजी धनेश राणा ने कहा कि यहां से हम सभी बहुत सारी आध्यात्मिक शक्तियां अपने साथ लेकर जाएंगे। इन शक्तियों द्वारा हम अपने अंदर की कमियों को दूर कर पाएंगे। हमारे तनाव आदि भी समाप्त होंगे।

ओआरसी की निदेशिका बीके शुक्ला दीदी ने ने कहा कि स्वयं सशक्त होकर दुनिया को सशक्त बनाते रहें। आध्यात्मिकता से अपना जीवन सशक्त बनाया जा सकता है। भारतीय नौसेना के सेवानिवृत वाइस एडमिरल एसएन घोरमड़े ने कहा कि वर्ष 2011 से लेकर आज तक मैं ब्रह्माकुमारीज की शिक्षाओं को आत्मसात कर रहा हूं।

विदिशा, मप्र। समाजसेवा प्रभाग के तहत मानवता के संरक्षक विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें एसडीएम गोपाल वर्मा, समाजसेवी अतुल शाह, अरुण कुमार सोनी, राजाराम राजपूत, सेवाकेंद्र संचालिका बीके रेखा दीदी, बीके रुक्मिणी दीदी मौजूद रहीं।

ब्रह्माकुमारीज़ टोंकः नशामुक्त भारत अभियान के तहत आयोजन

राजयोग से सभी तरह के नशे से मुक्त हो जाते हैं

शिव आमंत्रण, टोंक, राजस्थान। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के तहत नगर के घंटाघर सर्किल पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। साथ ही लोगों को जागरूक करने के लिए हजारों पंपलेट बांटे गए। शुभारंभ पर आयुर्वेद विभाग के उपनिदेशक प्यारे लाल मीणा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज की सेवा अनुकरणीय है। संस्थान का यह कार्यक्रम हजारों लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बन रहा है।

सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी अपर्णा दीदी ने कहा कि अभियान का उद्देश्य नशीली दवाओं का दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ आमजन तक संदेश पहुंचाना है। राजयोग के अभ्यास से आत्मिक सशक्तिकरण होता है। इससे सभी प्रकार के नशे से मुक्त हो जाते हैं। जीवन चरित्रवान, गुणवान बन जाता है। इस दौरान 150 भाई-बहनों ने स्वेच्छा से नशा छोड़ने के लिए अपना रजिस्ट्रेशन करवाया है। ब्रह्माकुमारी ऋतु दीदी, ब्रह्माकुमारी पूनम दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कवि प्रदीप पवार, नेहरू युवाकेंद्र के जिला अधिकारी हितेश कुमार, मोधवदास भाई, बिरदीचंद गुर्जर विशेष रूप से मौजूद रहे।

ब्रह्माकुमारीज़ और एनसीसी सिखाती है अनुशासन

शिव आमंत्रण, जयपुर।

ब्रह्माकुमारीज के राजयोग भवन वैशाली नगर के प्रभुनिधि सभागार में एनसीसी कैडेट के लिए सेल्फ एम्पॉवरमेंट लीडरशिप एंड टीम बिल्डिंग विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें एयर कमोडोर एलके जैन ने बताया कहा कि ब्रह्माकुमारीज एवं एनसीसी के सिद्धांत एक समान हैं। जिस प्रकार संस्था आध्यात्मिकता द्वारा अनुशासन के लिए प्रेरित करती है, ऐसे ही एनसीसी भी अपने कैडेट में अनुशासन को कूट-कूट कर भरता है।

लन्दन से पधारीं बीके गोपी दीदी ने कहा कि साइलेंस एक ऐसी शक्ति है जो मन को संतुलित कर हर विपरीत परिस्थिति का हल निकालने में मदद करती है। जयपुर की उपक्षेत्रीय संचालिका बीके सुषमा दीदी ने कहा कि एनसीसी कैडेट्स आने वाले समाज को दिशा दिखाने में अहम् भूमिका निभा सकते हैं। आप बुरी आदतों से दूर रहकर अनुशासित जीवनशैली अपनाएं। भारतीय सेना के कर्नल बीसी सती ने विपरीत परिस्थितियों में मेडिटेशन से सहज पार करने के गुर सिखाए। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके चंद्रकला दीदी ने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया। अफसरों सहित 300 कैडेट्स ने भाग लिया।

सार समाचार

आलीराजपुर/मप्र। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर डॉक्टर्स डे पर आयोजित कार्यक्रम आयोजित किया गया। समें शहर के जाने-माने डॉक्टर्स ने भाग लिया। वरिष्ठ राजयोगी बीके नारायण भाई, डॉक्टर संतोष सोलंकी, डॉ. प्रीति, डॉ. वरुण सराफ, डॉ. प्रदेश पटेल, सेवाकेंद्र प्रभारी माधुरी बहन ने संबोधित किया।

छतरपुर/मप्र। जिला होमगार्ड एसडीईआरएफ द्वारा चलाए जा रहे आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण आपदा मित्र योजना के तहत बीके रीना बहन, बीके रीना बहन ने आपदा के समय मन प्रबंधन और राजयोग मेडिटेशन से कैसे मन को नियंत्रित रखें पर विचार व्यक्त किए। होम कमांडेंट संजय गौर मौजूद रहे।

कुरुक्षेत्र, हरियाणा। कुरुक्षेत्र के विश्व शांति धाम में तीन दिवसीय समर कैंप आयोजित किया गया। शुभारंभ बीके सरोज बहन, नवयुग सीनियर सेकेंडरी स्कूल के संस्थापक बनारसी दास गाबा, संतोष गाबा और महिला कांग्रेस की जिलाध्यक्षा निशी गुप्ता ने किया। संचालन बीके विद्या बहन ने किया।

भीनमाल, राजस्थान। राजयोग केंद्र द्वारा चार तपस्विनी बहनों का समर्पण समारोह आयोजित किया गया। इसमें कुमारी संध्या, कुमारी गीतांजलि, कुमारी सुमन और कुमारी गुंजन ने संयम के पथ पर चलते हुए परमात्मा के कार्य में समर्पण किया और जीवनसाथी के रूप में अपनाया। इसमें माउंट आबू से विशेष रूप से बीके शीलू दीदी पधारीं। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके गीता दीदी ने आभार माना। बीके अस्मिता बहन, माउंट आबू से बीके रवि भाई, बीके अरुणा बहन, बीके सुचिता बहन मौजूद रहीं।

संबलपुर, उड़ीसा। ब्रह्माकुमारीज के सुरक्षा सेवा प्रभाग की ओर से सुरक्षा बलों के लिए सेल्फ इम्पॉवरमेंट टू नेशन इम्पॉवरमेंट विषय पर कैंपेन का शुभारंभ किया गया। सबजोन निदेशिका बीके पार्वती दीदी ने शुभ प्रेरणा दी। वहीं दिल्ली से सुरक्षा सेवा प्रभाग के फैकल्टी बीके कप्तान शिव भाई, बीके जयश्री बहन, बीके पूर्णिमा बहन तथा बीके संजीव भाई ने संबोधित किया। अलग-अलग स्थानों पर आयोजित कार्यक्रम में 1200 से ज्यादा सुरक्षा बलों ने भाग लिया और राजयोग मेडिटेशन के बारे में जाना।

जीवन में आने वालीं परिस्थितियां हैं हमारी शिक्षक

समस्या- समाधान राजयोगी बीके सूरज भाई, माउंट आबू

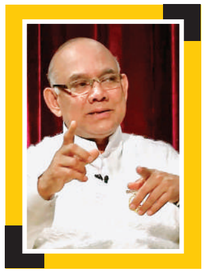

- आप लोग औरों को कहते हो कि राजयोग जीने की कला है। तो आप लोग राजयोगी जीवन वाले हो ना!

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

जो संगमयुग के मेले में रहते हैं वह सर्व झमेलों से मुक्त हो जाते हैं। बाबा कहते हैं सदा वाह-वाह कहो और कहते हैं व्हाई-व्हाई (क्यों, क्यों)। अगर कोई भी परिस्थिति में व्हाई शब्द आ जाता है तो उमंग-उत्साह का प्रेशर कम हो जाता है। बापदादा ने अगले साल भी विशेष डबल फारेनर्स को कहा था कि व्हाई शब्द को ब्राह्मण डिक्शनरी में चेंज करो। जब व्हाई शब्द आये तो फ्लाय शब्द याद रखो तो व्हाई खत्म हो जायेगा। कोई भी परिस्थिति छोटी भी जब बड़ी लगती है तो व्हाई शब्द आता है - ये क्यों, ये क्या... और फ्लाय कर लो तो परिस्थिति क्या होगी? छोटा-सा खिलौना।

अगर जीना है तो मौज से जीयें। सोच-सोचकर जीना वो जीना नहीं है। आप लोग औरों को कहते हो कि राजयोग जीने की कला है। तो आप लोग राजयोगी जीवन वाले हो ना! कि कहने वाले हो? जब राजयोग जीने की कला है तो राजयोगियों की कला क्या है? यही है ना? तो उत्सव मनाना अर्थात् मौज में रहना। मन भी मौज में, तन भी मौज में, सम्बन्ध-सम्पर्क भी मौज में।

कोई भी बड़े ते बड़ी नाजुक परिस्थिति वास्तव में आगे के लिये बहुत बड़ा पाठ पढ़ाती है, परिस्थिति नहीं है लेकिन वह आपकी टीचर है। उस नजर से देखो कि इस परिस्थिति ने क्या पाठ पढ़ाया? इसको कहा जाता है निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन करना। सिर्फ परिस्थिति को देखते हो तो घबरा जाते हो। और परिस्थिति माया द्वारा सदा नए-नए रूप से आएगी। वैसे ही नहीं आएगी, जिस रूप में आ चुकी है, उस रूप में नहीं आयेगी। नये रूप में आयेगी।

जैसा समय वैसा अपने को एडजेस्ट कर सको। ये अभ्यास आगे चलकर आपको बहुत काम में आएगा क्योंकि हालतें सदा एक जैसी नहीं रहनी है। और फाइनल पेपर आपका नाजुक समय पर होना है। आराम के समय पर नहीं होना है। नाजुक समय पर होना है। तो जितना अभी से अपने को एडजेस्ट करने की शक्ति होगी तो नाजुक समय पर पास विद् ऑनर हो सकेंगे। पेपर बहुत टाइम का नहीं है, पेपर तो बहुत थोड़े समय का है लेकिन चारों ओर की नाजुक परिस्थितियां, उनके बीच में पेपर देना है इसलिए अपने को नेचर में भी शक्तिशाली बनाओ।

संगमयुग पर सागर गंगा से अलग नहीं, गंगा सागर से अलग नहीं। इसी समय नदी और सागर के समाने का मेला होता है। जो इस मेले में रहते हैं वह सर्व झमेलों से मुक्त हो जाते हैं। लेकिन इस मेले का अनुभव वही कर सकते हैं जो समान बनते हैं। समान बनना अर्थात् समा जाना। जो सदा स्नेह में समाये हुए हैं वह सम्पूर्णता और सम्पन्नता की प्रालब्ध का अनुभव करते हैं। उन्हें कोई भी अल्पकाल के प्रालब्ध की इच्छा नहीं रहती।

इच्छा मात्रम अविद्या हो जीवन...

आज संसार में ज्यादातर समस्याओं का मुख्य कारण है मनुष्य की बढ़ती इच्छाएं। इच्छाओं का कभी अंत नहीं होता है। एक पूरी होती है तो दूसरी उत्पन्न हो जाती है। बाबा ने हमें सुंदर शिक्षा दी है कि बच्चे इच्छा मात्रम अविद्या बनो। कहीं भी मोह में, कामना में बुद्धि के तार फंसे न रहें। जितना निर्माण, निर्विकारी, निराकारी स्थिति की ओर बढ़ते जाएंगे, अपनी इच्छाओं को सीमित करते जाएंगे तो जीवन में अपने आप आनंद बढ़ता जाएगा। यदि जीवन में परम आनंद चाहते हैं तो किसी भी वस्तु, पदार्थ, मान-सम्मान की इच्छाओं से परे हो जाओ। जीवन में अपने आप आनंद आ जाएगा। हम राजयोगी तो हैं, जीवन भी श्रेष्ठ और महान बन गया है लेकिन मन के किसी कोने में कोई न कोई हद की इच्छा छिपी हुई है। इच्छा मनुष्य को कभी अच्छा नहीं बनने देती है। सर्व इच्छाओं से परे, परमात्मा को मन-बुद्धि अर्पित कर देंगे तो संतुष्टता, संपन्नता का भाव अपनेआप आ जाएगा। जीवन में परम सुख, परम संतोष समा जाएगा। सर्व के प्रिय, प्रभु प्रिय बन जाएंगे। पुरुषार्थ बढ़ जाएगा और आपका जीवन उदाहरणमूर्त बन जाएगा।

स्व प्रबंधन राजयोगिनी ऊषा दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, माउंट आबू

जितना बातों के विस्तार में जाएंगे उतनी समस्याएं बढ़ेंगी

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

एक गांव में एक ब्राह्मण था जो पंडिताई द्वारा जैसे-तैसे भरण-पोषण करता था। उसकी पत्नी अपने मन में कोई बात को छुपा नहीं पाती थी और किसी-न-किसी के सामने निकाल देती थी। एक दिन ब्राह्मण ने रोजी के लिए शहर जाने की इच्छा जताई तो ब्राह्मणी ने हां में हां मिला दी और अगली सुबह ब्राह्मण महाराज के भोजन की व्यवस्था कर उसे विदा किया।

चलते-चलते एक छायादार जगह देखकर वह रुका, भोजन की पोटली खोली और जैसी ही रोटी का टुकड़ा मुंह में डाला तो वृक्ष पर एक बगुला बैठा था और उसके मुख में एक कीड़ा था जो इस ब्राह्मण की रोटी पर गिर गया। उसने मन में कहा-राम-राम, छीः-छीः बड़ा अनर्थ हो गया, सारा भोजन अपवित्र हो गया, मैं भी अशुद्ध हो गया, अब मुझे घर को लौटना पड़ेगा। पति को घर में आया देख पत्नी ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

पंडित जी ने बहुत टालने की कोशिश की किन्तु ब्राह्मणी की जिद् के आगे हार गए पर उससे वचन ले लिया कि उसकी बताई बात वह किसी अन्य से नहीं कहेगी। ब्राह्मणी ने वायदा कर लिया परन्तु अगले दिन जब वह कुएं पर पानी भरने गई तो एक महिला ने बातों-बातों में सारा राज उससे उगलवा लिया। ब्राह्मणी ने बता दिया कि पंडित जी के भोजन में बगुले के मुख से कीड़ा गिर गया था इसलिए वे वापस लौट आए थे। उस महिला ने इस बात को बढ़ा चढ़ाकर प्रस्तुत करते हुए अपनी सहेली से कहा- क्या तूने सुना कि कल पंडित जी के मुख में एक बगुला घुस गया, गजब हो गया। यह बात उसकी सहेली ने दूसरी सहेली से इस प्रकार कहा- बड़े आश्चर्य की बात है कि पंडित जी के मुंह में तो बगुले आते और जाते हैं। बात बढ़ते-बढ़ते सारे गांव में और आसपास के गांव में भी फैल गई कि पंडित जी बड़े करिश्माई हैं, उनके मुख से जादुई शक्ति से तरह-तरह के पंछी निकलते हैं। एक दिन कई गांवों के लोग इक्कठे हुए और ग्राम पंचायत के सामने यह आग्रह रखा कि पंडित जी चमत्कार दिखाएं।

पंडित जी बड़े असमंजस में थे। वे समझ गए कि उनकी पत्नी के मुख से फिसली बात को लोगों ने बतंगड़ बना लिया है पर अब करते भी क्या? पंचायत में हाजिर होना ही पड़ा। उन्होंने पीछा छुड़ाने के लिए यह डर दिखाया कि जो भी मेरे मुख से निकलते पंख देखेगा, वह पंछी बन जाएगा। यह सुनकर सभी के होश उड़ गए और सभी भाग खड़े हुए। किसी-किसी ने यह भी कहना शुरू कर दिया कि पंडित जी मानव को पक्षी बनाने में माहिर हैं।

कोई भी बात का विस्तार बहुत जल्दी हो जाता है...

कहने का भाव है कि कोई भी बात का विस्तार बहुत जल्दी हो जाता है और बात क्या से क्या बन जाती है। कभी-कभी वही बात का बतंगड़ बन कर व्यक्ति के लिए मुसीबतें खड़ी कर देती है। इसलिए अब के समय अनुसार जितना बातों के विस्तार में जाएंगे उतना तकलीफें बढ़ेंगी। जितना किसी बात को सार में लिया जाता है यानी कम से कम शब्दों का प्रयोग करके बात को रखा जाता है उतना ही अच्छा होगा। वैसे भी विस्तार करना आसान है लेकिन बात को संकीर्ण करना अर्थात् सारयुक्त रखना मुश्किल है। जबकि सारगर्भित बात कहने वाले के वचनों का ही महत्व होता है और समाज उसकी इज्जत करता है।

अध्यात्म की उड़ान डॉ. बीके सचिन भाई, राजयोग एक्सपर्ट, माउंट आबू

दृढ़ता से असंभव भी संभव हो जाएगा

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

जीरो बन जीरो में समाना ज्ञान कंठ कर लिया, पढ़ लिया, समझ लिया, समझा भी दिया लेकिन जीवन में प्रैक्टिकल कितना अनुभव किया है। जीवन में कितना धारण किया है, वही योग्य है। जो अचानक अदृश्य हो जाता है। जीरो हो जाता है, वही मास्टर सद्गुरु है, उसके 3 सूत्र हैं।

तीन शर्तें- कंठ कर लेना, याद कर लेना। ज्ञान को समझ लेना है। ज्ञान को आत्मसात कर लेना है। ज्ञान को आत्मसात करने पर उस परम से अनुभूति होगी। उस अनुभूति में सब कुछ नष्ट हो जाएगा। जो वासनाएं, आसक्ति, विकार, विकर्म, व्यर्थ, नकारात्मकता जो जरूरी नहीं था, वह सभी समाप्त हो जाएगा। अंदर कोई विकार होता है- जैसे बीड़ी, सिगरेट, दारू की तलब होती है उसको छोड़ दिया जैसे ही देखते हैं तो उसको याद आता है क्योंकि वह आत्मा के अंदर संस्कार भरे हुए हैं। वैसे ही विकारों को याद नहीं करना है लेकिन ज्ञान को याद करना है जो महावाक्य मिले हैं उनको बार-बार याद करने से वह संस्कार बन जाएंगे। मुरली को इतनी बार पढ़ना है जो मुरली कंठ याद हो जाए। दृढ़ता की शक्ति से असंभव भी संभव हो जाएगा। असंभव सफलता में परिवर्तित हो जाएगा।

मुरली को समझ लेना। आत्मसात कर लेना अंगीकार कर लेना है वह हमारे जीवन में दिखाई देने लगे। बापदादा के महावाक्य (23.01.1974) हैं अपने आप प्रोग्राम बनाओ, प्रोग्राम बनेगा तो कर लेंगे, यह भट्ठी बनेगी तो कर लेंगे। यह सहयोग आधार नहीं है। कभी सहयोग मिल सकता कभी सहयोग नहीं मिल सकता। अभ्यास निराधार का होना चाहिए। अगर चांस मिल जाता है तो अच्छा ही है, ना मिलने पर अभ्यास से हटना नहीं चाहिए। प्रोग्राम पर आधार बनाकर उन्नति का आधार बनाना कमजोरी है। हर वक्त भट्ठी में रहना, यह अनादि प्रोग्राम है। अकेले रहने का प्रोग्राम बनाना है। आधार अनित्य है, आधार धोखेबाज हैं, आधार भ्रम है। इस पुरुषार्थ के मार्ग में हम अकेले हैं। अकेले हो जाना ही साधना है। आधार भी व्यर्थ था का चिंतन करना है उसमें बेस्ट होने वाला टाइम, मनी, एनर्जी बेस्ट होने वाली चीजों को चेक करना है।

कबीर का दोहा- समंदर लागी आगी नदियां जल कर कोयला हुईं। समंदर अर्थात आत्मा के अंदर आसक्ति, वासनाओं की नदियों में आग लग गई है। इंद्रियों की वासनाओं में आग लग गई है, सभी आग में जल गई हैं। यह देख कबीर जान गए हैं। अर्थात आत्म ज्योति शास्त्राहार चक्र तक पहुंच गई है।

भट्ठी में समर्पण करना है...

प्राण जीवन नया जीवन है। प्राण अर्थात ऊर्जा प्राण, शक्ति प्राण, तेज प्राण। प्राण अर्थात वह शक्ति जो सर्व व्यापक है, आत्मा सर्व व्यापक नहीं है परमात्मा सर्व व्यापक नहीं हैं परंतु प्राण सर्वव्यापक है। प्राण अर्थात संजीवनी शक्ति, तेज शक्ति, जीवन शक्ति। कोई देश उसे वाटरफॉल कहता है। कोई कॉस्मिक वाइब्रेशन, कॉस्मिक माइक्रोटेस्ट, यूनिवर्सल लाइफ, हॉस्पिटल इनर्जी, फोटो इमेजिंग पावर कहते हैं। प्राण को अनेक नाम दिए हुए, प्राण को असंख्य नाम दिए हैं। प्राण ऊर्जा जीवन तेज है। प्राण ऊर्जा हमारे शरीर में ऊर्जा विद्यमान है। ऐसा संसार में कोई स्थान नहीं है जहां पर यह प्राण ऊर्जा विद्यमान नहीं है। अपने जीवन में प्राण ऊर्जा भरना है। मैं थक गया हूं, मुझे नींद आ रही है ऐसे शब्दों का प्रयोग समाप्त हो जाएगा। आत्मिक ऊर्जा को, चेतना को ऊर्जा से भर देना है। प्राण अर्थात हर चीज में प्राण ऊर्जा भरी हुई, ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां प्राण ऊर्जा नहीं है। परंतु कुछ जगह प्राण ऊर्जा बहुत ज्यादा है। जैसे मधुबन में बहुत ज्यादा ऊर्जा है, बंद कमरे में ऊर्जा कम है। नदी किनारे चले जाओ प्राण ऊर्जा ज्यादा है।

ज्ञान सरोवर में समाज सेवकों का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

अध्यात्म से वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना होती है जागृत

शिव आमंत्रण, माउंट आबू/राजस्थान

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के समाज सेवा प्रभाग द्वारा ज्ञान सरोवर अकादमी परिसर में मूल्य आधारित समाज की पुनर्स्थापना विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें राजस्थान अनुसूचित जाति आयोग उपाध्यक्ष सचिन विष्णुदेव सरवटे ने कहा कि अध्यात्म के साथ की गई समाजसेवा से वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना जागृत होती है। जीव-जन्तुओं से लेकर मानव, प्रकृति, पर्यावरण संरक्षण समेत सामाजिक सेवाओं के बढ़ते दायरे के उत्थान के लिए सच्चे समाजसेवक के मन में किसी तरह का भी भेदभाव नहीं होता है। इसी परिपाटी को सामने रखते हुए विश्वव्यापी ब्रह्माकुमारी संगठन की ओर से की जा रही सेवाओं की बदौलत समाज के हर तबके को एकता के सूत्र में पिरोने का सराहनीय कार्य किया जा रहा है।

प्रभाग की अध्यक्षा व संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके संतोष दीदी ने ने कहा कि स्वयं को परिवर्तन करने की शक्ति अर्जित करने के लिए आत्मा को परमात्मा से जोड़ा होगा। संपूर्ण निर्विकारिता आत्मा के मूल संस्कार हैं।

सुख, शांति, आनंद, प्रेम, पवित्रता, ज्ञान, शक्ति आत्मा के निजी गुण हैं। ईश्वर की याद से ही सदगुणों की प्राप्ति होती है। नेपाल नारायणगढ़ से आए मित्र मिलन समाज अध्यक्ष बालाराम जोशी ने सामाजिक रिश्तों को बेहतर बनाने के लिए छोटी से छोटी समाजसेवा में भी अपनी सहभागिता बनाए रखने पर बल दिया। अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक रोटेरियन सरजीव पटेल ने कहा कि अनावश्यक संग्रह की बढ़ती प्रवृत्ति समाज सेवाओं के क्षेत्र में बाधक बन जाती है। दिल्ली से आए समाजसेवक डॉ. जीपी भगत, प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके प्रेम, राष्ट्रीय संयोजक बीके अवतार, अतिरिक्त राष्ट्रीय संयोजिका बीके वंदना बहन, दिल्ली क्षेत्रीय संयोजिका बीके आशा बहन, मुख्यालय संयोजक बीके वीरेंद्र, चंडीगढ़ से आई वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सुमन बहन ने भी विचार व्यक्त किए।

जीवन में चुनौतियों का सामना करने को तैयार रहना चाहिए..

राजस्थान सरकार में राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त विमुक्त घुमन्तू व अर्धघुमन्त कल्याण बोर्ड अध्यक्ष उर्मिला योगी ने कहा कि सामाजिक ढांचे को बेहतर बनाने के लिए जीवन में कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करने को तैयार रहना चाहिए। सामाजिक सेवाओं को मूर्तरूप देते समय सिद्धांतों से किसी भी परिस्थिति में समझौता नहीं करना चाहिए। श्रीकच्छ गुर्जर क्षत्रिय समाज महिला मंडल अध्यक्ष अमिता बेन वी सोलंकी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संगठन संसार को बेहतर बनाने में व्यापक स्तर पर अध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हुए मानव जीवन को सुगंधित बनाने में तत्पर है। हीमोफिलिया जनजागृति मंच अध्यक्ष प्रवीण सिंह मोरी ने कहा कि विश्व को बेहतर बनाने के लिए समत्व, ममत्व और अपनत्व की मानसिकता होनी चाहिए। समाज सेवा को अमलीजामा पहनाने से पूर्व स्वयं के अस्तित्व को पहचानना होगा। करनाल से आई वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके प्रेम बहन, दिल्ली से बीके भावना, ग्राम सेवा सहकारी समिति अध्यक्ष हरि सिंह राजपुरोहित ने भी संबोधित किया।

माउंट आबू: युवा संसद आयोजित

युवा राजयोग सीखें और अपना जीवन लाइट हाउस समान बनाएं

शिव आमंत्रण, माउंट आबू/राजस्थान

ब्रह्माकुमारीज के यूथ विंग के तत्वावधान में आध्यात्मिक युवा संसदः खुशहाल और बेहतर विश्व विषय पर अखिल भारतीय युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया।

जयपुर से आए यूनाइटेड नेशंस प्रोग्राम एनालिस्ट कुमार मनीष ने कहा कि जीवन में कुछ ऐसे भी पल आते हैं जब पूरा जीवन ही परिवर्तित हो जाता है। आज वही पल है। हम सभी युवाओं को हमेशा अपना पसंदीदा मार्ग चुनने का अवसर रहता है। सिर्फ ख्याल यही रखना है कि उसमें विश्व कल्याण समाया हुआ रहना चाहिए। अपने मनोबल को मजबूत रखें। अध्यात्म उसमें हमारा सहारा बनता है।

ब्रह्माकुमारीज की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी डॉ. बीके निर्मला दीदी ने कहा कि भारत को बदलना है, भारतवासी ही ऐसा करेंगे। करावनहार जरूर परमात्मा हैं परन्तु करना हम सभी को है। भारत को रामराज्य बनाने के लिए सभी को योग के द्वारा ऐसा प्रयास करना होगा। आप सभी जरूर योगाभ्यास करें। दृढ संकल्प से स्व परिवर्तन होगा, विश्व परिवर्तन होगा। दूसरों को मत देखें। अंतर्मुखी बनें, खुद को देखें, सफलता मिलेगी।

यूथ विंग की उपाध्यक्ष राजयोगिनी बीके चन्द्रिका दीदी ने कहा कि युवा संसद में पहुंचे युवा जरूर कुछ कमाल कर के दिखाएंगे। हम यही चाहते हैं कि सब कुछ अच्छा हो। खानपान, रहन-सहन, क़ानून व्यवस्था आदि आदि सभी उत्तम हो। मगर यह होगा कैसे?

एक उदाहरण के माध्यम से आपने समझाया कि अगर हम एक इंसान के सर्वांगीण विकास की सोचें और व्यावहारिक रूप से ऐसा कर सकें तो विश्व का कल्याण हो जाएगा। हमें दूसरों पर दोषारोपण छोड़कर स्वयं का सुधार करने की ओर ध्यान देना चाहिए। चैरिटी बिगिंस एट होम। बेहतर विश्व निर्माण के लिए यही सर्वोत्तम विधि है। आप सभी को यहां से राजयोग सीख कर जाना है और उसके अभ्यास से अपना जीवन लाइट हाउस समान बनाना है। विंग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके कृति दीदी ने कहा कि युवा ही बदलाव के नायक होते हैं।

राजस्थान यूथ बोर्ड के मेंबर कैलाश चंद्र पहाड़िया ने कहा कि मैं यहां पवित्र होने आया हूं। ज्ञान सरोवर में डुबकी लगाने आया हूं। यह जी-20 से सम्बद्ध कार्यक्रम है और काफी महत्वपूर्ण है। एक सुन्दर संसार के लिए आप को संकल्प लेना है कि आप सत्य का हमेशा साथ देंगे। सत्य से आपके जीवन में समर्पण आएगा। समर्पण से सद्गुण से जीवनभर जाता है और सामाजिक परिवर्तन आने लगता है। तभी हमारे इस यूथ संसद का लक्ष्य पूरा होगा।

विंग के वरिष्ठ सदस्य बीके जीतू भाई, बीके अरुण भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कुमारी गायत्री और कुमारी अर्चना ने एक सुन्दर भावपूर्ण नृत्य प्रस्तुत किया। मधुर वाणी ग्रुप ने गीत द्वारा युवाओं का स्वागत किया। भीनमाल से पधारीं बीके गीता बहन ने संचालन किया।

प्रथम मुख्य प्रशासिका मम्मा का 58वां पुण्य स्मृति दिवस विश्वभर में मनाया

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान

ब्रह्माकुमारीज संस्थान की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती (मम्मा) का 58वां पुण्य स्मृति दिवस संस्थान के विश्वभर में स्थित सेवाकेंद्र, उपसेवाकेंद्र और पाठशालाओं में आध्यात्मिक ज्ञान दिवस के रूप में मनाया गया।

मुख्य कार्यक्रम शांतिवन के डायमंड हॉल में आयोजित किया गया, जहां मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी सहित वरिष्ठ बीके भाई-बहनों ने मम्मा के जीवन चरित्रों को याद करते हुए पुष्पांजली अर्पित की। उन्होंने कहा कि मम्मा का जीवन हम ब्रह्मा वत्सों के लिए प्रेरणादायी, पथप्रदर्शक और ईश्वरीय मार्ग पर चलने के लिए एक मिसाल है। मम्मा ने अल्पायु में ही कठिन योग साधना से संपूर्णता की स्थिति बना ली थी। आज आपके बताए मार्ग पर चलकर लाखों ब्रह्माकुमार भाई-बहन अपना जीवन श्रेष्ठ बनाने के मार्ग पर अग्रसर हैं। सुबह मम्मा की याद में सबसे पहले योग लगाया गया।

कार्यक्रम में संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि मातेश्वरी मम्मा सदा अंतर्मुखी रहती थीं। मम्मा हमेशा कहती थीं कि सदा दो मंत्र याद रखो- एक हर घड़ी अंतिम घड़ी है। दूसरा हुक्मी हुक्म चला रहा है। इन्हीं मंत्रों से सहज नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप हो जाएंगे। इससे ही शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा की आशाओं को पूरी कर सकेंगे। मम्मा बचपन से ही तपस्वी, और दिव्य बुद्धि की धनी थीं। उनके सामने कैसी भी परिस्थिति आई लेकिन वह कभी विचलित नहीं हुईं। उन्होंने कठिन योग-साधना से स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया था कि कैसा भी क्रोधी व्यक्ति उनके सामने आता था तो वह शांत हो जाता था। आप रात में 2 बजे से योग-साधना करती थीं। आपने सदा हां जी का पाठ पढ़ा।

जीवन में परीक्षाएं तो आएंगी...

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके गीता दीदी ने कहा कि ऐसा नहीं है कि राजयोगी बनने के बाद जीवन में परीक्षाएं नहीं आएंगी। यह सब तो होता आया है। परमात्मा पर अटल निश्चय रख करके अपना पुरुषार्थ करना है। कार्यक्रम में मुख्य रूप से कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई, मीडिया निदेशक बीके करुणा भाई, मीडिया विंग के उपाध्यक्ष बीके आत्मप्रकाश भाई, बीके रुविमणी दीदी सहित देशभर से आए बीके सदस्य मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-
वार्षिक मूल्य ₹ 150 रुपए ₹ तीन वर्ष 450 रुपए
₹ आजीवन 3500 रुपए
मो ₹ 9414172596, 8521095678
Website ₹ www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता
संपादक ₹ ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो ₹ 8538970910, 9179018078
Email ₹ shivamantran@bkivv.org

For online transfer
A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 6377090960
Scan To Pay

मातृ स्नेही बनो तब हर कोई मानेंगे सुनेंगे, उस पर चलेंगे

प्रेरणापुंज

राजयोगिनी दादी जानकी, पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज, माउंट आबू

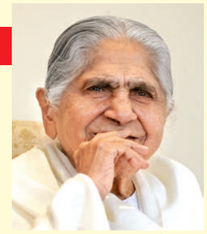

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

कभी-कभी सहन शक्ति कम हो जाती है सहनशक्ति कम होने के कारण गुस्सा भी आता है और उस गुस्से में कभी-कभी संबंध भी खराब हो जाते हैं तो हम कैसे अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं? जवाब- अंतर्मुखता के साथ आध्यात्मिकता बहुत मदद करती है। आध्यात्मिकता अंदर ही अंदर अपने आप को समझने में सामने जो बातें हैं उसको समझने में सहज कर देती है। संबंधों में जब कोई बातों को फील करता है तो भारीपन आता है। टोन चेंज हो जाता है, फिर स्नेह के बगैर रूखापन आ जाता है। जब रूखापन संबंध में हो तो जीवन नहीं है। लौकिक में मैं माता और बहन के हिसाब से बड़ी थी। मैंने देखा वह लोग सहन नहीं कर सकते तो मैं करती थी। क्योंकि बहुत काम होता है घर का काम बच्चों का काम जिसमें लोग थक जाते हैं। थकने के कारण सहनशक्ति नहीं होती है। फिर आवाज बदल जाता है, तो यह ध्यान रखना चाहिए कि सब अच्छा है। जब से जो माताएं ज्ञान मार्ग में आई हैं घर स्वर्ग बनता जा रहा है। घर तो वही है वही बाल बच्चे हैं, वही काम है फिर भी बाल बच्चों को प्यार से शिक्षा देते जाओ खुद उस पर चलो।

> मधुर संबंधों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है सहनशक्ति का विकास करना

मातृ स्नेही बनो तब हर कोई मानेंगे, सुनेंगे, चलेंगे। बच्चों के नहीं सुनने के कारण यह है कि हमारे पालना का तरीका ऐसा नहीं है जो सुने। मैंने अनुभव किया है कि प्यार से बच्चों को चलाओ। जब मैं ज्ञान मार्ग में आई तो सभी ने हमें बेबी मॉल नाम रखा। सभी माताओं ने हमें अपना बच्चा संभालने को दे दिया। मेरी 21 साल की उम्र थी। उससे पहले हमने एक भी बच्चा नहीं संभाला। लेकिन हमने 40 बच्चों को संभाला। बच्चों को सही टाइम पर उठाना, बिठाना, खिलाना-पिलाना करती थी। सभी बहुत खुश थे। सहनशक्ति के साथ संतुष्टि का कनेक्शन है अगर मैं संतुष्ट हूं तो सहनशील भी रहूंगी।

कई बार परिवार के अंदर सबका मन संभालना पड़ता है सबका मन संभालते-संभालते अपना मन डिस्टर्ब हो जाता है तो उसके लिए राजयोग मदद कर सकता है। राजयोग माना साइलेंस में जाना, शांति में रहने के लिए साइलेंस चाहिए। साइलेंस क्यों जाना मतलब परमात्मा से कनेक्शन रिलेशन अर्थात हमारे अंदर परमात्मा की शक्ति आ गई। तो हमारा संबंध किसके साथ है एक तो हमारा माता-पिता परमात्मा वैसा मैं आत्मा। परमात्मा हमारे माता-पिता सद्गुरु, सखा, बंधु, शिक्षक सभी संबंधों में हैं। यह संबंध अंदर से बहुत शक्ति देती है। अशांत वातावरण में अंदर से डिस्टर्ब आत्माओं को सूक्ष्म गुप्त रूप से राजयोग अभ्यास करने की जरूरत है।

सहनशक्ति से परिवार में रहेगी सुख-शांति....

जितना हम परिवार में सहनशक्ति के साथ चलेंगे, एक-दूसरे की कमी-कमजोरियों को अपने अंदर समाएंगे। एक-दूसरे की विशेषताओं को देखते हुए उन्हें आगे बढ़ाने में मदद करेंगे। उनकी हौसला आफजाई करेंगे तो इस तरह हमारे आपसी संबंध मधुर और प्रेममय बने रहेंगे। जब हम पारिवारिक संबंधों में एक-दूसरे की कमी-कमजोरियों को देखते हैं, आरोप-प्रत्यारोप लगाते हैं तो मनमुटाव होता है। संबंधों में तनाव बढ़ता है जो आपसी दूरियां बना देता है। मधुर और प्रेममय, सुखमय संबंधों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है अपने अंदर सहनशक्ति का विकास करना।

रियल लाइफ प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू

विकारों में न फंस बंदे, खुद को भुलाया, परमात्मा को भुलाया, जाना है अकेला

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

हमने देखा कि मेले का महात्म्य, गंगा स्नान से होने वाले पुण्य तथा संगम के फल का ही बखान किया जा रहा था। स्वयं सन्यासी,साधू आदि जो कि आत्मा को निर्लेप मानते हैं, भी पावन होने के विचार से डुबकी लगा रहे थे। स्नान करने की होड़ तथा जनता की अनियन्त्रित भीड़भाड़ के परिणामस्वरूप वहाँ एक पुल भी टूट गया था और कई लोग भगदड़ में मरे भी और पुल टूटने से दुर्घटना और मृत्यु के शिकार हुए थे। परन्तु फिर भी मनुष्यों ने कोई शिक्षा ग्रहण नहीं की।

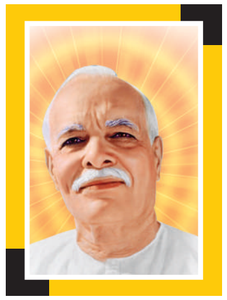

हम उन्हें कहती थीं विकारों में न फँस बन्दे। अगर ईश्वर को पाना है। अगर सतयुग में जाना है। विकारों में न फँस बन्दे आपको भुलाया, बाप को भुलाया। अकेला ही तू आया था, अकेला लौट जाना है ! विकारों में न फँस बन्दे अगर बैकुण्ठ में जाना है !! आया था पार्ट बजाने, कर्मों को श्रेष्ठ बनाने, तू फँस गया मोह-माया में, इसी को घर बना बैठा !! विकारों में न फँस बन्दे अगर मुक्ति को पाना है। माया से नाता तोड़ों, ईश्वर से नाता जोड़ो, बनो तुम शुद्र से ब्राह्मण, अगर सतयुग में जाना है। विकारों में न फँस बन्दे अगर मुक्ति को पाना है।

परमात्मा ही अज्ञान की नींद से जगा सकते हैं...

इस प्रकार लोगों के सम्पर्क में आने से हमें संसार की हालत का और अच्छी तरह पता लगा। हमने अनुभव किया कि सचमुच आज दुनिया की ऐसी हालत हो गई है और आज इन्सान अन्ध-श्रद्धा की जंजीरों में ऐसी बुरी तरह जकड़ चुका है कि उसे इनसे मुक्त करना किसी मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है। स्वयं सर्वशक्तिवान् परमपिता परमात्मा ही इन्हें अज्ञान की गहरी नींद से जगा सकते हैं। सचमुच परमपिता परमात्मा का इस समय जो अवतरण हुआ है वह बिल्कुल ठीक समय हुआ है। अतः हमें ये शब्द याद हो आते थे।

परन्तु वे सुनी बात को अनसुनी कर देते थे, क्योंकि वे तो आत्मा को निर्लेप माने बैठे थे और स्वयं कोई पुरुषार्थ नहीं करना चाहते थे बल्कि गंगा को ही उन्हींने पतित से पावन बनाने का कर्त्तव्य दे रखा था। भारत की भोली जनता की यह दशा देखकर हम कन्याओं-माताओं के मन में बहुत करुणा का उद्रेक होता था। हम बहुत सोचती थीं कि हम इन्हें अन्धश्रद्धा के गर्त से कैसे निकालें और तत्व भक्ति की जंजीरों से कैसे छुड़ायें! हम कहतीं - 'हाय भारत की जनता, तुम्हारा कैसा हाल हो गया है! करोड़ों रुपये, समय तथा शक्ति मेलों पर जाती है। दूसरी ओर करोड़ों लोगों को भरपेट भोजन भी नहीं मिलता।

जनता ने मेले में प्राप्त क्या किया?

स्वतन्त्र भारत की सरकार भी इस अन्ध-श्रद्धा के पोषण में अपना हाथ देती है क्योंकि उसे भी विशेष रेलगाड़ियाँ चलाकर तथा यात्री कर आदि लेकर करोड़ों रुपयों की कमाई होती है। हाय, कोई भी इन्हें स्पष्ट शब्दों में सच्ची बात नहीं बताते थे। मनुष्यों का एक अथाह समुद्र वहाँ उमड़ रहा था। कुछ ही दिनों में लोग लौट गये। यात्रा के कष्ट झेल कर, धन खर्च करके वे लोग आए परन्तु उन्होंने प्राप्त क्या किया? हमारे मन में बहुत दया आती कि हम कन्याएँ - माताएँ ही अब भारत के जन जन की अथक ज्ञान-सेवा करेंगी।

अव्यक्त इशारे राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी), पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

जहां बाबा वहां और कोई दिल में बैठ नहीं सकता

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

बाबा के साथ का अनुभव करने के लिए पहले यह चेकिंग करो कोई भी व्यक्ति से सम्बन्ध अगर गहरा होगा तो बाबा से नहीं होगा क्योंकि जहां बाबा है वहां और कोई दिल में बैठ ही नहीं सकता है। अगर बाबा के साथ का अनुभव होता है, संबंध की फीलिंग आती है तो उस समय की अवस्था क्या होती है? हम लोगों को साकार में भी साथ का अनुभव है और अव्यक्त व निराकार के साथ के सम्बन्ध का भी अनुभव है इसलिए कभी अपने ऊपर बोझ महसूस नहीं होता। लेकिन जिन्हें इसका अनुभव नहीं है तो सोचते हैं - बाबा बैठा है ना, बाबा है तो सही ना। जिम्मेवार तो वह है ना! ऐसे-ऐसे क्वेश्चन उठते हैं लेकिन अनुभव नहीं होता। अनुभव हो तो कभी अपने को कमजोर नहीं समझेंगे। हजार भुजा वाला बाबा साथ है ऐसी रीयल फीलिंग प्रैक्टिकल में आती है तो उस समय इतना बल आ जाता है जो परिस्थिति उसके आगे बहुत छोटी-सी लगती है क्योंकि साथ का अनुभव होगा । तो बाबा ऊँचे-से-ऊँचा है और साथ के अनुभव से हमारी स्थिति भी ऊंची हो जाती है। हम ऊँचे हो गये तो परिस्थिति कितनी भी बड़ी हो, वह छोटी ही दिखाई देगी। जैसे प्लेन में ऊपर जाते हैं तो सारी दिल्ली एक मॉडल लगती है। वैसे आप एक एरिया भी नहीं घूम सकते। तो ऊंचा जाने से वह परिस्थिति वा हालतें सब छोटी दिखाई देती हैं। दुनिया वाले कहते हैं पहाड़ राई के समान दिखाई देता है, बाबा ने कहा राई भी नहीं रुई । राई फिर भी सख्त होती है, रूई को ऐसे फूंक दो तो उड़ जायेगी। ऐसे ही बाबा साथ है तो उसी समय कोई बड़े-से-बड़ी परिस्थिति भी जैसे कुछ नहीं है। तूफ़ान भी एक मनोरंजन खेल लगेगा फिर माया वार नहीं कर सकती, वह खुद ही भाग जायेगी। लेकिन इसके लिए पहले हमारा संबंध गहरा है ? और बाबा से अटूट प्यार है ? कई बार जिस समय कोई बात होती है उस समय प्यार पैदा होता है, बाबा आप तो सर्वशक्तिवान हो, आप तो क्षमा के सागर हो .... उस समय याद आता लेकिन साधारण रीति से वह स्मृति इमर्ज नहीं रहती, मर्ज रहती है। कई फिर साथ रहते भी हैं लेकिन समय अनुसार उस साथ को प्रयोग में नहीं लाते।

बाबा तो बुद्धिवानों की बुद्धि है...

हम लोगों को तो बाबा के साथ का ऐसा अनुभव है, जो सब तरफ़ ना होते भी बाबा के साथ का जब हम प्रयोग करते तो बाबा के साथ का बल इतना मिलता है, बाबा तो बुद्धिवानों की बुद्धि है, वह किसी की भी बुद्धि को टच कर लेता है। जो असम्भव है वह इतना सहज सम्भव हो जाता है जो समझ भी नहीं सकते कि यह न से हां हुई कैसे। लेकिन यह है बाबा के साथ की मदद। कई कहते हैं बाबा साथ तो हैं लेकिन कोई को बाबा बहुत मदद देता है, हमें मदद कम देता है, पता नहीं क्यों? बाबा से रूह-रूहान तो करते हैं लेकिन क्लीयर जवाब नहीं मिलता है? हम तो बाबा के पास सब रखते हैं, बाबा यह है, यह है...बाबा के आगे क्वेश्चन भी रखते हैं लेकिन उत्तर नहीं मिलता है। कोई को मिलता है, कोई को नहीं मिलता है कारण ? क्या जिसको उत्तर मिलता है उससे बाबा का विशेष प्यार है, जिसको नहीं मिलता है उससे कम है? बाबा का तो गीत है - मुझे काँटों से भी प्यार है, फूलों से भी प्यार है। फिर कारण क्या होता है ? हमारी बुद्धि कैच नहीं कर पाती है क्योंकि सूक्ष्म है ना। कोई स्थूल आवाज तो आयेगा नहीं। बाबा कोई आवाज से तो कहता नहीं है कि बच्ची ऐसे करो, ऐसे नहीं। यह तो सूक्ष्म टच करता है, परन्तु हमारी बुद्धि सूक्ष्म है ही नहीं, युद्ध में है, बाबा को याद करते हैं फिर थोड़ा बाड़ीकान्सेंस में आ जाते हैं। फिर कहते अभी तो बाबा को याद करना है, अभी सेवा भी याद नहीं करनी है।

तो युद्ध की स्थिति जो होती है उसमें मन बुद्धि क्लीयर नहीं होता है, उसमें लगा हुआ बिजी है, खाली नहीं है। जैसे फोन मिलाते हैं और लाइन बिजी है तो हमको रेसपाण्ड कैसे मिलेगा। तो पहले हम देखें कि हमारा मन-बुद्धि कहाँ इंगेज तो नहीं है ? युद्ध कर रहे हैं तो इंगेज हुआ ना। फिर बाबा का रेसपाण्ड कैसे मिलेगा। अगर वह कर भी रहा है तो हमको कैसे सुनने में आयेगा, कैसे होगा। इन्स्ट्रूमेंट ठीक होना चाहिए। पहले अपने मन-बुद्धि को क्लीयर करना चाहिए। जिसे बाबा कहते हैं साफ दिल मुराद हासिल।

राष्ट्रपति के ग्वालियर आगमन पर ब्रह्माकुमारी बहनों ने किया स्वागत, सामाजिक सेवाओं के बारे में बताया

ग्वालियर (मप्र)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के ग्वालियर आगमन पर ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने मुलाकात कर स्वागत किया। स्थानीय सेवाकेंद्र प्रभारी बीके आदर्श दीदी के नेतृत्व में बीके वरिष्ठ राजयोगी डॉ. बीके गुरचरण सिंह, बीके प्रहलाद सिंह, बीके रोशनी बहन, बीके सुरभि बहन ने राष्ट्रपति से मुलाकात की। इस दौरान बीके आदर्श दीदी ने संस्थान की ओर से शहर में की जा रहीं जल कल्याणकारी, समाजसेवी और जन सरोकार से जुड़ी सेवाओं के बारे में बताया।

पीएम से मिलीं ब्रह्माकुमारी कमल

शिव आमंत्रण, बीकानेर/राज.। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बीकानेर आगमन पर एयरपोर्ट पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की संभाग संचालिका, बीके कमल दीदी ने स्वागत किया। प्रधानमंत्री ने उनका हाल-चाल पूछकर धन्यवाद किया।

मुख्यमंत्री बोले- जल्द माउंट आबू जाऊंगा और अवलोकरन करुंगा

अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू आने का मुख्यमंत्री को दिया निमंत्रण

शिव आमंत्रण, वाराणसी/उप्र।

श्रीराम नगर कॉलोनी, बीएल डबलू स्थित सेवाकेंद्र से राजयोगिनी बीके सरोज दीदी के नेतृत्व में 6 सदस्यों ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से स्नेह मुलाकात की। इस दौरान बीके सरोज दीदी ने उन्हें संस्था के मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमन्त्रण दिया। साथ ही संस्था द्वारा की जा रही आध्यात्मिक और सामाजिक जन सेवाओं की भी जानकारी दी। मुख्यमंत्री योगी ने वाराणसी एवं प्रदेशभर में संस्था द्वारा की जा रही सेवाओं के लिए आभार जताया। उन्होंने मुख्यालय में स्थित आदरणीया दादीजी के साथ वरिष्ठजनों का कुशलक्षेम भी जाना और मुख्यालय पधारने के निमंत्रण पर अपनी सहमति जताते हुए कहा कि मैं बहुत शीघ्र ही एक बार अवश्य जाऊंगा। मेरी भी हार्दिक इच्छा है कि मैं वहां पहुंचकर दादियों से मिलूं और मुख्यालय का पूरा अवलोकन करूं। सेवाकेंद्र की सहप्रभारी बीके चंदा, बीके खुशी, बीके श्याम, बीके सूरज, बीके अभिनंदन भी मौजूद रहे।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, धमतरी (छग)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र की ओर से डॉक्टर्स डे एवं सीए डे के उपलक्ष्य में राधाकृष्ण हॉल महालक्ष्मी वीन में सेमीनार आयोजित किया गया। इसमें मुख्य रूप से समाजसेवी राजेश शर्मा, डॉ. प्रभात गुप्ता, डॉ. दिलीप नलगे, सेवाकेंद्र संचालिका बीके सरिता दीदी मुख्य रूप से मौजूद रहीं।

सोनीपत/हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र की ओर से आईआईटी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में पीधारोपण किया गया। बीके प्रमोद दीदी ने विद्यार्थियों को राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताते हुए राजयोग की गहन अनुभूति कराई। इस दौरान पूरा कॉलेज स्टाफ भी मौजूद रहा।

रीवा, मप्र। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र शांतिधाम झिरिया पर डॉक्टर डे पर शहर के डॉक्टर्स का सम्मान मेडल एवं सम्मान पत्र भेंट कर किया गया। इस मौके पर क्षेत्रीय संचालिका बीके निर्मला दीदी, कार्यक्रम संयोजक बीके प्रकाश, बीके ज्योति बहन, बीके उर्मिला बहन, बीके मानसी बहन, बीके अंजुला बहन, बीके सुभाष, बीके दीपक तिवारी सहित शहर के गणमान्य डॉक्टर्स मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, शिवहर (बिहार)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र की ओर से जेल में नशामुक्त भारत अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर तरावा सेवाकेंद्र की संचालिका बीके सुनीता बहन, जिला पदाधिकारी राम शंकर, पुलिस अधीक्षक अनंत कुमार राय, जेल अधीक्षक डॉ. दीपक कुमार, जेल चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. उमाशंकर गुप्ता, बीके संजय मुख्य रूप से मौजूद रहे।

यहां से जीवन में नई दिशा मिलती है

रतलाम, मप्र। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत नशा निवारक दिवस पर सर्किल जेल में कार्यक्रम में आयोजित किया गया। ब्रह्माकुमारी अनीता दीदी, ब्रह्माकुमारी सविता दीदी, बीके आरती बहन, बीके साक्षी बहन उपस्थित रहे। स्टेट बैंक के चीफ मैनेजर नरसिंह रामटेके ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान में आने के बाद उनके जीवन में बहुत ही परिवर्तन आया है। यहां से जीवन जीने की एक नई दिशा एवं राह मिलती है जिससे हम स्वयं सदा शांत रहकर हर कार्य शांतिपूर्वक कर सकते हैं।

छग के उप मुख्यमंत्री से की मुलाकात

अंबिकापुर, छत्तीसगढ़। प्रथम उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव को बनाए जाने के बाद अंबिकापुर आगमन पर ब्रह्माकुमारी विद्या दीदी ने मुलाकात कर स्वागत किया और माउंट आबू आने का निमंत्रण दिया।

मुख्यालय में राष्ट्रीय शिवशक्ति स्नेह मिलन आयोजित

शिवशक्ति लीडरशिप.. महिलाओं की आंतरिक शक्तियों को जगाने की विश्वव्यापी पहल

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

संयुक्त राष्ट्र महिला आयोग और ब्रह्माकुमारीज द्वारा शिवशक्ति लीडरशिप इनीशिएटिव इंटरनेशनल प्रोजेक्ट शुरू किया गया है। प्रोजेक्ट के तहत मनमोहिनीवन के ग्लोबल ऑडिटोरियम में पहला राष्ट्रीय शिवशक्ति स्नेह मिलन आयोजित किया गया। इसमें देशभर से शिवशक्तियों ने भाग लिया। मुख्य तीन आध्यात्मिक सिद्धांतों को शामिल किया है-सहयोगात्मक, करुणामय और सशक्त। प्रोजेक्ट का उद्देश्य महिलाओं में उभरती हुई आंतरिक शक्तियों का सुरक्षित माहौल में विकास करना, उन्हें प्रेरित करके शक्ति नेतृत्व के सही अर्थ द्वारा स्वयं और समाज के परिवर्तन में लगाना है। पूरे विश्व में विभिन्न देशों में ब्रह्माकुमारी बहनों की टीम बनी हुई है और प्रत्येक टीम का एक फोकल पॉइंट पर्सन नियुक्त किया गया है। शुभारंभ मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके डॉ. निर्मला दीदी, कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके शीलू दीदी, मुख्यालय शान्तिवन की फोकल पॉइंट पर्सन डॉ. बीके सुनीता दीदी डॉ. बीके सुनीता दीदी, न्यूयार्क यूएन में एडवाइजर बीके गायत्री नरीने ने किया।

राज्यपाल ने किया नशामुक्त बिहार अभियान का शुभारंभ

शिव आमंत्रण, पटना/बिहार

ब्रह्माकुमारीज की ओर से आयोजित कार्यक्रम में राज्य स्तरीय नशामुक्त भारत अभियान की लांचिंग राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने की। उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेठ, विश्व हिन्दू परिसद के अंतराष्ट्रीय अध्यक्ष पद्मश्री रविंद्र नारायण सिंह, माउन्ट आबू से डॉ. बनारसी लाल शाह, डॉ. सचिन परब और पटना की संचालिका बीके संगीता बहन मुख्य रूप से मौजूद रहीं।

कार्यक्रम में राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कहा कि आज नशा बहुत बड़ी समस्या बन गया है। नशे के कारण अनेक समस्याएं जन्म लेती हैं। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चलाए जा रहे नशामुक्त भारत अभियान बहुत ही सराहनीय पहल है। इससे लोगों को लाभ मिलेगा। आज समाज में ऐसे अभियान, कार्यक्रम चलाए जाने की जरुरत है। संस्थान द्वारा मानव कल्याण, समाज कल्याण के लिए की जा रहीं सेवाएं सराहनीय हैं। बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी, मदन साहनी ने भी संबोधित किया।

केंद्रीय मंत्री बोले- शांति स्थापन करने का कार्य कर रही संस्था

शिव आमंत्रण, मुजफ्फरपुर/बिहार।

आमगोला रोड स्थित ब्रह्माकुमारीज के सुख-शांति भवन सभागार में जिला स्तरीय नशामुक्त भारत अभियान का शुभारंभ भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने किया।

मंत्री कुमार ने कहा कि जब तक समाज की सहभागिता नहीं होगी, सामाजिक एवं आध्यात्मिक संस्थान अपनी भूमिका नहीं निभाएंगे तब तक नशा समाज से समाप्त नहीं हो सकेगा। मैं ब्रह्माकुमारी संस्थान एवं प्रधानमंत्री जी का आभारी हूं. उन्होंने मुझे नशा मुक्त भारत अभियान के निमित्त बनाया। बचपन से आज तक मैंने चाय का स्वाद नहीं चखा है। पाश्चात्य सभ्यता के चकाचौंध में हमारी युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित हो रही है। हकीकत यह है कि शान्ति के लिए पश्चिम पूर्व की ओर, भारत की ओर देखता है। स्कूल कॉलेज के आसपास नशे के कारोबारी अपनी पुड़िया का कारोबार कर रहे हैं,उन्हें दूर करना है। ब्रह्माकुमारी संस्थान समाज में शांति स्थापित करने के लिए कार्य कर रही है। जीवन में शांति आती है तो मनुष्य सशक्त बनता है और देश सशक्त बनता है। संस्थान स्वयं के लिए नहीं, समाज के लिए, राष्ट्र के लिए कार्य करती है। ब्रह्माकुमारीज जैसी संस्थाओं को देखकर मुझे इस मार्ग में काम करने के लिए ऊर्जा एवं प्रेरणा मिलती है।

बिहार-झारखंड सेवाकेंद्रों की निदेशिका राजयोगिनी बीके रानी दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्था सत्संग नहीं है, ये ईश्वरीय विश्व विद्यालय है। यहां प्रतिदिन पढ़ाई होती है। हरेक पर व्यक्तिगत ध्यान देकर उनके खानपान, रहन-सहन के विषय में पूछा जाता है। उसमें सुधार किया जाता है। इससे जुड़कर 17 लाख भाई बहनें सर्व प्रकार के नशे से मुक्त हैं और आज देश को नशा मुक्त बनाने की सेवा में अग्रसर हैं। समाज श्रेष्ठ बने, नशा मुक्त बने, स्वस्थ बने, यही ब्रह्माकुमारी संस्थान का लक्ष्य है। विधान पार्षद प्रमोद चंद्रवंशी, एनटीपीसी कांटी के सीईओ केएमके प्रुष्टि, भाजपा जिलाध्यक्ष रंजन कुमार ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस मौके पर बीके संजय, बीके अरविंद, बीके भारती बहन ने भी अपने विचार रखे। संचालन बीके कंचन बहन ने किया। बीके शिवप्रसाद ने आभार व्यक्त किया।

सीतामढ़ीः जिला स्तरीय नशामुक्त अभियान का शुभारंभ

राजयोग जीवनशैली से स्वत: नशामुक्त बन जाएंगे

शिव आमंत्रण, सीतामढ़ी (बिहार)

व्यसन मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत व्यसन मुक्त बिहार अभियान का जिला स्तरीय शुभारंभ निर्मला उत्सव पैलेस में आयोजित किया गया। इसमें मुख्यालय से आए मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसीलाल शाह ने कहा कि जैसे भारत छोड़ो नारे से अंग्रेजों को भगाया, वैसे नशा छोड़ो अभियान के नारे से भारत को व्यसन मुक्ति-नशा मुक्त बनाएंगे। भारत देवताओं का देश रहा है। ऐसे कोई भी चीज देवताओं को नहीं स्वीकार है, वैसे हमें भी स्वीकार नहीं होनी चाहिए। आज देश 65 परसेंट युवा नशे के शिकार हैं। राजयोग जीवन शैली को अपनाकर, हम सहज और स्वतः नशा मुक्त बन जाएंगे। विंग के सह सचिव डॉ. सचिन परब ने कहा कि एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में प्रतिदिन 37000 लोग नशा करने के कारण मरते हैं और 55000 लोग नशे के नए शिकारी बनते हैं। जिला सह प्रभारी सिविल सर्जन डॉ. सुनील कुमार सिन्हा, नगर आयुक्त प्रमोद कुमार पांडे, जिविका के डीपीएम उमाशंकर भगत, एसडीओ प्रशांत कुमार, मलेरिया पदाधिकारी रविंदर यादव, सेवाकेन्द्र संचालिका बीके बंदना दीदी, बीके संजय, शिवहर सेवाकेन्द्र की संचालिका बीके भारती बहन ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन बीके डॉ. फलक ने किया। डॉ. रेनू चटर्जी, चेंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष मदन प्रसाद और माउंट आबू से आए बीके प्रेम विशेष रूप से मौजूद रहे।

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संयुक्त संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन

समर्पण की राह...

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। जीवन में त्याग और तप की राह दुर्लभ और कठिन है। लेकिन इस राह का आनंद और सुकून भी अपना है। जीवन में जब कोई कदम या निर्णय स्व इच्छा, स्व विवेक और स्व संकल्प से उठाया जाता है तो भले कितने ही कंकड़, पत्थर, शूल और कांटे पल-पल राह रोकने के लिए पड़े हों, लेकिन उसका संतोष और आनंद उस पथिक का राही ही महसूस कर सकता है। आध्यात्मिक जीवन वह जीवन है जिसमें कोई जबरजस्ती, किसी के दबाव में निर्णय लेकर नहीं चल सकता है। यह तो अनंत की वह यात्रा है जिसमें यात्री भी हम अकेले हैं और मंजिल भी तय करना है। लेकिन जब मन-बुद्धि इस राह को अंतर्मन से आत्मसात कर लेती है तो त्याग-तपस्या का मार्ग कठिन न होकर आनंदोत्सव के रूप में बदल जाता है। जीवन में मधुर संगीत गूंजने लगता है। जीवन उपवन की तरह खिल उठता है और मन से गीत निकलता है... **वाह मेरा भाग्य वाह.... वाह भाग्यविधाता वाह।** आंखों में सुनहरे भविष्य और महान लक्ष्य की चमक। चेहरे पर पवित्रता का तेज। वाणी में ओज। खुशी में थिरकते कदम। आनंद से सराबोर जीवन और आत्मविश्वास से भरा व्यक्तित्व। ऐसी एक दो नहीं बल्कि 450 बालब्रह्मचारिणी बेटियों ने एकसाथ संयम के मार्ग पर चलते हुए त्याग-तपस्या का मार्ग अपनाया। ब्रह्माकुमारीज के इतिहास में पहली बार मुख्यालय शांतिवन में अलौकिक महासमर्पण समारोह विगत दिनों आयोजित किया गया। जब इन बेटियों से युवावस्था में इस दुर्लभ राह को चुनने का सवाल किया और जो जवाब आए वह आज भौतिकता की चकाचौंध में डूबी युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत और आदर्शमूर्त हैं।

पवित्रता का व्रत अपने आप में कठिन साधना-

आज की युवा पीढ़ी कई मायनों में पहले से ज्यादा समझदार है। उसके अपने सपने हैं और जीवन के प्रति नजरिया और लक्ष्य साफ है। जब इन दैवी स्वरूपा बहनों से बात की तो ब्रह्माकुमारी बनने के पीछे किसी का कहना था कि दुनियावी मनुष्य से शादी करने पर एक जन्म साथ निभाता है, दुख भी दे सकता है। लेकिन परमात्मा ऐसा जीवनसाथी है जो सदा-सदा के लिए साथ निभाता है। जन्मोंजन्म के लिए साथी बनकर साथ देता है। वह पतियों के पति परमेश्वर हैं। कहने का भाव यही है कि उच्च शिक्षित समझदार इन बेटियों ने एकसाथ इतने बड़े पैमाने पर संयम का मार्ग अपनाया है तो कुछ तो ऐसा गूढ़ रहस्य होगा जो हर किसी को करीब से जानने का प्रयास करना चाहिए। पवित्रता के व्रत का पालन करना दुनिया में अपनेआप में एक महान तपस्या, साधना और सबसे बड़ा त्याग है। साधु-संत इसी पवित्रता को अखंड बनाने के लिए हिमालय की कंदराओं का रुख करते हैं। लेकिन इन बेटियों ने घर-गृहस्थ में रहते इतने सहज, सरल और साधारण तरीके से इस पर विजय पाई है यह दुनिया के लिए शोध का विषय है।

परमात्मा को पाने के बाद कुछ पाना शेष नहीं रह जाता-

इन बेटियों के चाल-चलन और चेहरे पर साफतौर पर कुछ पाने के भाव को देखा जा सकता था। इनका सादगी संपन्न, पवित्र जीवन इस बात की गवाही देता है कि सादगी जीवन वह अनमोल गहना है जो हमें परमात्मा के करीब ले जाता है। अपने जीवन को विश्व कल्याण और समाजसेवा में अर्पण करने वालीं महाराष्ट्र की कुमारियों ने पूरे आत्म विश्वास और खुशी के साथ बतातीं हैं कि मेरा जीवनसाथी ऐसा है जो पूरे 21 जन्म, जन्मोंजन्म साथ निभाएगा। वह कभी साथ नहीं छोड़ेगा, कभी दुख नहीं देगा। यह तो मेरा परम सौभाग्य है कि इस जन्म में परमात्मा को अपना बनाया। उनकी श्रीमत पर चलकर समाज के लिए कुछ करने का मौका मिला।

मुझे औरों के लिए, समाज के लिए जीना है-

वहीं दिल्ली की एक कुमारी बताती हैं कि बचपन से एक ख्वाब था कि अपने लिए तो सभी जीते हैं लेकिन मुझे औरों के लिए जीना है। मुझे समाज की भलाई के लिए कुछ करना है। लोगों के दु:ख,दर्द, तकलीफ कम हो सके ऐसे कार्य करना है। महाराष्ट्र की एक बेटी ने सिर्फ इसलिए अपने जीवन की दिशा बदल दी क्योंकि वह जब कॉलेज में थी तो एक क्लासमेट ने तनाव में आकर सुसाइड कर लिया। उसी पल उन्होंने संकल्प किया कि यदि जीवन में मैंने ऐसे दस लोगों को भी सुसाइड करने से रोक लिया तो जीवन सफल हो जाएगा। खुद को धन्य महसूस करुंगी।

युवा पीढ़ी में बदलाव की ललक और जुनून-

इन तपस्वी बहनों से बातचीत में एक बात निकलकर आई कि अपने लिए तो सभी जीते हैं लेकिन समाज कल्याण, समाज की भलाई के लिए जीना ही वास्तव में जीवन है। वर्तमान युग महापरिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में सबसे बड़ी समाजसेवा है परमात्मा के इस दिव्य, पुनीत और नई दुनिया के स्थापना के कार्य में अपनी सहयोग रूपी अंगुली लगाना। नई युवा पीढ़ी में बदलाव की जो ललक, उमंग-उत्साह और जोश है वह बताता है कि वह दिन दूर नहीं जब भारत फिर से सोने की चिड़िया, विश्वगुरु बनेगा। स्वर्णिम भारत की तस्वीर जल्द इस धरा पर साकार होगी। परमात्मा की शिक्षाओं को जीवन में धारण कर श्रेष्ठ और महान बना सकते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में राजयोग मेडिटेशन से संयम और पवित्रता की राह फूल के समान हो जाती है। हमारा नजरिया साफ और स्पष्ट हो जाता है। मन में आनंद के गीत गुनगुनाने लगते हैं।

जीवन प्रबंधन

राजयोगिनी बीके शिवानी दीदी, अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता, गुरुग्राम, हरियाणा

जैसी ऊर्जा हम सामने वाले को देंगे वही हमें मिलेगी...

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

आज चार लोग एक घर में इकठ्ठे नहीं रह सकते। पति-पत्नी के तलाक की दर बढ़ गई है। आज छोटे-छोटे बच्चों को तनाव और हताशा हो गई है। हमने सिर्फ कहा काम तो होता गया, काम तो होता गया। पति-पत्नी दोनों काम करते हैं दोनों सारा दिन ऐसे वातावरण में होंगे जहाँ ऊर्जा ये होगी कि गुस्से से ही काम होता है तो उनको तो वो ऊर्जा तो मिलती ही रहेगी। वो दो लोग जब घर पहुंचेंगे शाम को तो उनके पास क्या ताकत बचेगी। एक-दूसरे को सहन करने की, तालमेल करने की, सहयोग करने की फिर उस पर से बच्चे को भी समझने की, संभालने की कहां ताकत बची और फिर छोटी-छोटी बात में वही तनाव और क्लेश। क्योंकि हमने कहा- काम करवाने के लिए ये चाहिए। गुस्सा वो नकारात्मक ऊर्जा है जो किसी के लिए भी उपयोगी नहीं हो सकती है। हर बच्चे की एक क्षमता होती है हमें उसको पढ़ाना है। पढ़ने के लिए उसको बोलना भी है, हमें उसके नियम भी रखने ही हैं लेकिन हमें डांटने की ऊर्जा देनी है वो प्रश्न चिन्ह है। हां, ये हो सकता है अगर उसको आप कुछ बोलो ही नहीं तो वो पढ़ेगा नहीं, तो बोलना तो है ना लेकिन डांटकर बोलना है और फिर अगर डांट से भी नहीं सुना तो हाथ उठाकर बोलना है ये प्रश्न चिन्ह है।

शांति से काम लेंगे तो समझ आएगा कैसे बदलना है....

एक दिन एक होमवर्क रखा था कि आज सारा दिन हम स्थिर रहेंगे चाहे कुछ भी हो जाए तो एक बहन घर गई उसकी तीन साल की बेटी वो उससे झगड़ा करने लगी कि मेरे को छोड़ के चली गई। मेरे को साथ में लेकर नहीं गई, रोने लगी। तो कहती है पहले सामान्यतः मैं क्या करती थी दो झापड़ लगा देती और किचन में चली जाती, नाश्ता बनाने के लिए। सरल काम है ना दो झापड़ मारा और किचन में चले गए। वो थोड़ी देर रोकर अपने आप चुप हो जाएगी। लेकिन आज निश्चय किया था कि आज गुस्सा नहीं करना है तो फिर मैंने उसको प्यार से बोला हां, मैं नहीं लेकर गई तुम सोई हुई थी। मैं तुमको शाम को लेकर जाऊंगी तो वो और जोर से रोने लगी। उसको अंदर से विचार आया कि कितना समय बर्बाद हो रहा है। इसके साथ सुबह-सुबह, नाश्ता बनाना है, देरी हो रही है लेकिन गुस्सा उस दिन नहीं करना था तो मैंने नहीं किया चार-चार बार मैंने उसको प्यार से बोला, फिर भी वो कठोरता से बात करती रही। मैंने फिर प्यार से बोला वो फिर भी कठोरता से बात करती रही। लेकिन पांचवीं बार उसने भी मुझसे प्यार से बात की। वो बहन के आंख में उस दिन आंसू आ गए। अब उसे समझ में आया इनको कैसे बदलना है। लेकिन सामान्यतः मैं कौन सा तरीका उपयोग करती थी, समय नहीं है ना। 15 मिनट लग गए उसको वो पांच बार करने की प्रक्रिया में लेकिन 15 सेकंड का काम था, दो थप्पड़ मार के किचन में जाना, 15 सेकंड से ज्यादा नहीं लगता किसी बच्चे को थप्पड़ मारने में लेकिन बार-बार उससे प्यार से बात करें वो फिर भी चिल्ला रहा है।

हम फिर भी प्यार से बात करें तो 15 मिनट लग गए, लेकिन वो 15 मिनट में हमने क्या कर दिया। नहीं तो ये दृश्य तो हर रोज ही होता होगा। किसी ना किसी बात पर और रोज वो ही 15 सेकंड वाला तरीका उपयोग होता होगा। मारा, डांटा किचन में गए। मारा, डांटा, खाना, खिला दिया। मारा, डांटा पढ़ाई करा दी। वो तो रोज होता है और रोज हमारी भी और उनकी भी शक्ति कम होती जाती है।

बच्चों को बदलने के लिए ताकत चाहिए....

बच्चों को बदलना उनसे वही काम प्यार से करवाना इसमें ताकत चाहिए। मार के करवाना, डांट के करवाना जल्दी होता है तो ये कमजोरी उनकी नहीं है, ये कमजोरी हमारी है कि हमारे पास न वो 15 मिनट का समय है। न हमारे पास उतना धैर्य है कि हम बार-बार प्यार से कोशिश करेंगे। लेकिन अगर हमने ये प्यार वाला तरीका अपनाया तो वो सिर्फ कुछ ही दिन करना पड़ेगा 15 मिनट, उसके बाद उस बच्चे के अंदर वो ताकत बढ़ती जायेगी। अब उस बच्चे को भी आदत पड़ी हुई है कि ये मुझसे डांट के काम करवाते हैं, इसी तरह कार्यालय में भी लोगों को आदत पड़ी हुई हैं डांट के काम करवाने की। आप एक ऑफिस में बोल दो चाहे कुछ भी हो जाए गुस्सा नहीं करेंगे! काम करना है करो या नहीं करना है तो मत करो, तो लोग आपके लिए काम करेंगे या नहीं? वो आपके लिए काम करना चाहेंगे। अभी तो काम करना पड़ता है और काम करना चाहें दोनों में बहुत फर्क होता है। वो ऐसे काम करना चाहेंगे कि आप उनकों बोलेंगे 6 बज गये बंद करो घर जाओ! तो बोलेंगे नहीं सर आधा घंटा और चाहिए खत्म करके जाना है, क्योंकि उनको अब जो ऊर्जा मिल रही है सारा दिन वो सम्मान की मिलती है।

जब हम किसी को डांटते हैं तो उनका अनादर करते हैं....

जब हम किसी को डांटते हैं तो हम उनका अनादर करते हैं जो हमारा अनादर करते हैं। हम उनके लिए मजबूरी से काम करते हैं क्योंकि हमें वो पगार चाहिए लेकिन जो हमारा आदर करते है, हमें जो प्यार करते हैं हम उनके लिए फिर केवल पगार के लिए नहीं बल्कि हम उनके लिए और उनके साथ काम करना चाहते हैं, लेकिन इसका प्रयोग करना पड़ता है क्योंकि इसमें थोड़ा-सा समय लगेगा, धैर्य लगेगा। क्योंकि पुरानी वाली मान्यता बहुत गहरी बैठी हुई है। जैसी ऊर्जा हम उनको देंगे उनसे वही ऊर्जा हमें मिलेगी। सारा दिन हरेक के प्रति अपनी सोच की जांच करते रहो।

एक आदर वाला संकल्प करें, एक सोच विश्वास की पैदा करें...

हम सब्जी लेने जाते हैं सामान चुनते हैं वो सब्जी तौल रहा है। आप एक संकल्प करते हैं आजकल तो ये लोग बहुत गोलमाल करते हैं, बहुत धोखा करते हैं। आजकल ये लोग, ये सब लोग ऐसे ही हो गए है। ये अनादर की ऊर्जा है। हम कुछ नहीं बोलते और कभी-कभी तो बोल भी देंगे ठीक से तौलो, ये अनादर की ऊर्जा है। अगर ये संकल्प हमने पैदा किया और उधर तक भेजा तो वो निश्चित गड़बड़ करेगा। एक आदर वाला संकल्प करें एक सोच विश्वास की पैदा करें। कल उसी दुकानदार के पास जायें, उसी सब्जी वाले के पास जायें, ऑटो में बैठते हैं पहले से संकल्प करते हैं ये धोखा तो नहीं करेगा, अब उन लोगों को सारा दिन वो संकल्प सबसे मिलता है हरेक जो उनकी दुकान पर आता है, हरेक जो ऑटो में बैठता है वो उनको ये ही उर्जा दे रहा है तो निश्चित रूप से वो क्या करेंगे वो ही करेंगे। संकल्प करना ये उनको एसएमएस करने के समान है कि ये करो। ऊर्जा है ना! एसएमएस क्या है आपने संदेश भेजा मुझे संदेश मिला और मैं इतनी आज्ञाकारी हूँ कि आप जो संदेश भेजेंगे मैं वो ही करूंगी क्योंकि आपका संदेश मेरे अंदर एक संदेश उत्पन्न करना शुरू करता है। संकल्प, विचार शक्ति क्या है एक तीर की तरह होता है। कौन हैं वो सारे लोग जो हमें सारा दिन मिलते हैं! हमारी ही तरह हमारे ही परिवारों के लोग हैं न। ये मेरी ही तरह हैं बहुत ईमानदार हैं। आप एक बार तीर भेजो, दो बार तीर भेजो, तीन बार भेजो।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, पीस विलेज, न्यूयार्क (अमेरिका)। ब्रह्माकुमारीज के पीस विलेज सेवाकेंद्र पर संयुक्त राज्यभर से आए बीके भाई-बहनों की वार्षिक मीटिंग आयोजित की गई। इसमें संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी ने आध्यात्मिक पुरुषार्थ बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन दिया।

शिव आमंत्रण, मुंबई। ब्रह्माकुमारीज द्वारा घाटकोपर में आरोग्यदा मल्टीसुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल का उद्घाटन किया गया। 50 बैड के इस मल्टीसुपर स्पेशलियटी अस्पताल सभी आधुनिक सुविधाओं से लैस है। इसका उद्घाटन राजयोगी निकुंज भाई, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके विष्णुप्रिया बहन ने किया।

शिव आमंत्रण, कादमा (हरियाणा)। विश्व युवक केन्द्र के तत्वावधान में ग्रामीण विकास मंडल द्वारा पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया गया। इस मौके पर पर्यावरण विशेषज्ञ डॉ. आरएन यादव, झोझूकलां क्षेत्रीय प्रभारी राजयोगिनी बीके वसुधा बहन, साहित्यकार डॉ. मखन लाल ने संबोधित किया।

शिव आमंत्रण, महेश्वर (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस पर नगर के चिकित्सकों का सम्मान समारोह किया गया। साथ ही निःशुल्क चिकित्सा शिविर रखा गया। मुख्य वक्ता ब्रह्माकुमार नारायण भाई, सेवाकेंद्र संचालिका अनीता दीदी, डॉ. पंकज वर्मा, डॉ. मनीष वर्मा, डॉ. बीएल लछेटा, डॉ. दीपक वर्मा, डॉ. वंदना सोनी, महिला चिकित्सा अधिकारी डॉ. साक्षी सोनी, चिकित्सा अधिकारी पल्लवी पाटीदार धामनोद, डॉ. कमल जाधव, बीके सारिका दीदी मुख्य रूप से मौजूद रहीं।

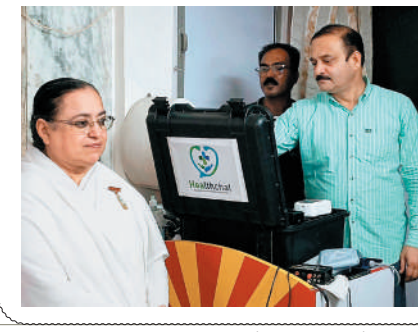

शिव आमंत्रण, थाने/महाराष्ट्र। थाने शिवाजी नगर सेवाकेंद्र की ओर से मेडिकल कैंप का आयोजन लाइट हाउस सेवाकेंद्र पर रखा गया। जिसमें डॉ. कैलाश घोरपुड़े और उनकी टीम ने कंप्यूटर बॉडी चेकअप किया। कार्यक्रम में विशेष थाने श्रीनगर पुलिस स्टेशन के टीआई सुनील शिंदे, डॉ. शाहदा, समाज सेविका विशाखा खटाल, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सरला बहन मौजूद रहीं।

■ RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021-23, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 July 2023
■ स्वामीः राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन ■ प्रकाशक, संपादक व मुद्रक : ब्र.कु. कोमल द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित ■ संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र